

বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়



স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়



চতুর্থ সেমিস্টারের অন্তর্গত এস ই সি -টু কোর্সের জন্য উপস্থাপিত

প্রকল্প পত্র :- বলাকা কাব্যের বিষয়বস্তু

শিক্ষার্থীর নাম :- শ্রাবণী জানা

সেমিস্টার :- চতুর্থ

পত্র - এস ই সি -টু

রেজিস্ট্রেশন নং - ২১১০৪০২৪৪, ২০২১-২০২২

রোল নং :- ১১১৪১৫২-২১০০২১

শিক্ষাবর্ষ : ২০২২-২০২৩

SWARNAMOYEE JOGENDRANATH MAHAVIDYALAYA



Govt. Aided General Degree College | Estd.: 2014
At P.O.: Amdabad, P.S.: Nandigram, Dist.: PurbaMedinipur, PIN 721650
www.sjmahavidyalaya.in/ Email: sjmahavidyalaya@gmail.com

CERTIFICATE

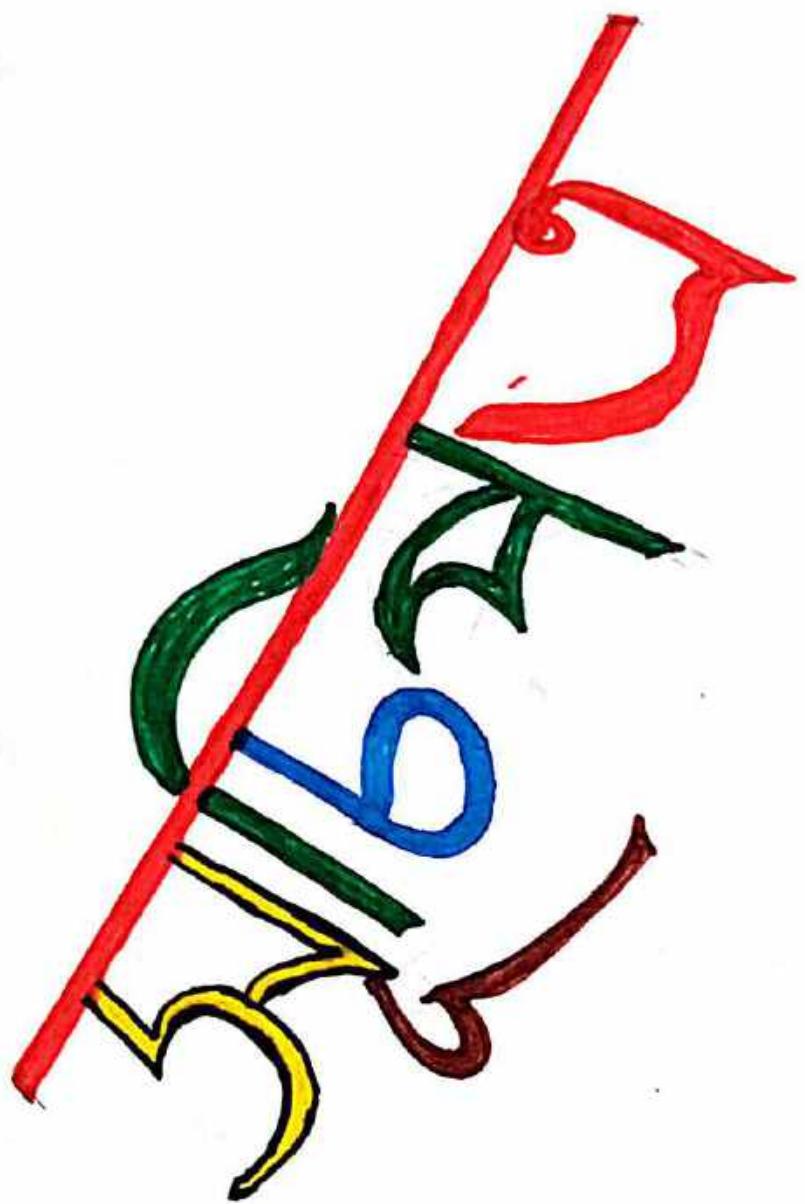
This is to certify that Shraboni Jana, Roll: 1114152, No: 210021,
Reg.No:- _____ of _____, a student of B.A. 4th Semester (Honours).
Bengali Department, Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya for the session 2022-2023; submitted
his/her project report for partial fulfillment of the syllabus of SEC-2.(CBGS) prescribed by Vidyasagar
University. The project has been prepared under the supervision of Dr. Madhumita Basu and Surajit
Mandal and ready to place before examiner for evaluation.

Supervisors

Samanta
Dr. Ratan Kumar Samanta
Principal
S.J. Mahavidyalaya

Principal
Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya
Amdabad :: Purba Medinipur :: Pin-721650

Basu
Dr. Madhumita Basu
Assistant Professor & HOD
Department of Bengali,
S.J. Mahavidyalaya
Head of the Department,
Department of Bengali
Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya
Amdabad :: Purba Medinipur :: Pin-721650
Mandal
Surajit Mandal
SACT-I, Department of
Bengali
S.J. Mahavidyalaya
Mahavidyalaya
Department of Bengali
S.J. Mahavidyalaya



Ramnath
Department of Bengali
S.J. Mahavidyalaya

ক) অবস্থা কাকে বলে?

⇒ কোনো বিজ্ঞান উদ্যোগ প্র-পরিকল্পনা মন্ত্রণালয় মন্ত্রণ দ্বাৰা
সম্ভালা কৰা হয় কাকে অবস্থা বলে।

* অবস্থাক টেকনিক্স কী কী?

অবস্থাক টেকনিক্স কী? :-

i) মাধ্যাকেন্দ্ৰিক :-

অবস্থা কুৰা মাধ্যাকেন্দ্ৰিক কৰ্ত্তা, কোনো না কোনো মাধ্যাকে কৰ্ত্তা
কৰে অবস্থার কাণ্ড মাধ্যাদি হয়ে পাবে।

ii) উজ্জ্বলিতিক :-

কোনো বিজ্ঞান উদ্যোগ কৰে এ কৰে অবস্থাৰ কাণ্ড স্থানিক
হয়ে পাবে।

iii) সূক্ষ্মালিত :-

অবস্থাৰ কাণ্ড একটি দিনে কিমোৰ সূক্ষ্মালিতত আৰম্ভ হৈ।

iv) অভিবৃত্ত :-

অবস্থামূলক কাণ্ড মাধ্যাম কৰতে নিয়ে কিমোৰ কাণ্ডে একটি দিনে
অভিবৃত্ত হৈয়া হৈ।

v) অনুস্থানমূলক কাণ্ড :-

অবস্থা কাণ্ড নিয়ে কিমোৰ পানাফুলমূলক অনুস্থানমূলক কাণ্ড একটি
দিনে হৈতে।

viii) वायुवर्कल्पिताजः—

असम चित्रित राष्ट्र धर्मो ता लाग्ना वायुवर्कल्पिताज़ राहे
इयो राहे।

vii) असम गल्फ बाह्यर भूमि दिये मिशनीया रिक्वेस भृत्य गाहानिंग,
ग्रामपालिंग, ग्रामदुन्ता, एक अपार्टमेंट अठि ग्रामपालिंग, ग्रामदुन्ता
सुनामी भुवि दिक्षिति उडियू शुभान एहो एहो।

(g) प्रकाश कायाप्रणाली ओ ची की?

असम अधिकारीत दुष्प्रणाली, धर्मोः— i) धर्मक प्रकाश
ii) दूसरी प्रकाश

(g) अकल्पना उडियू शुभान की की?

⇒ अकल्पना उडियू शुभान की।

i) अठिटि लिङ्गायीको उआदानमुक्त—बाह्यर भूमि भूमि रक्षा, लिङ्गायीको
संख्याशोरी रक्षा एवं तान्द्रे दृष्ट्यक्त रक्षा, मानविक चिकित्सा भूमि रक्षा,

ii) लिङ्गायीदेह मस्ति दूसरोंको रक्षा रक्षा भूमि रक्षा उक्त एहो।

iii) प्रकाश राष्ट्रधर्म बहुत निष्ठे लिङ्गायीदेह पड़द बहुते बहुते
जिसे निष्ठे धर्म अठिन्द्रु शुभान पाख।

Q. প্রকল্পমূলক কানুন উপরাখি বী?

- i) প্রকল্প কানুনের মধ্যে কিছীবেই পর্যবেক্ষণ উচিত নাহি।
পাই,
ii) কিছীবেই মধ্যে দাতাত গোটে কানুন রহিব মানবিকতা উচিত নাহি।
iii) প্রকল্প কানুন রহিব নিছে কিছীবেই পড়া রহিব বাহিবে নিছে।
নিষ্ঠ জন আজুন মুখ্য পাইয়া নাহি।

Q. প্রকল্পের শুভ ও অযোগ্যতা কী?

-বর্তমানে প্রতিপাদিতমূলক আইনিক চিকিৎসা প্রতিক দাতাত অবশিষ্ট
ক্ষেত্রে অসমিয় এবং প্রকল্পের শুভ ও অযোগ্যতা জনিবিম, প্রতিক
দেশ অবস্থা অবশিষ্টিক ক্ষেত্রে অবস্থা মানবিক অবশিষ্টিক দিকে কিছো
নজুর নিছু। তা-ই অবস্থা ক্ষেত্রে অন্ধক পরিকল্পনা সমাপ্তি উপস্থিতি
জন নিভু বিবরণে প্রকল্প অৱৰ বৰা হয়ে আছে। এবং এই প্রকল্প
মনুষে অস্ত্রাবিকায় ডিউল স্থান বিশিষ্ট কৰা হয়ে আছে জাতিয়
ক্ষেত্রে অন্ধক অবস্থা আছে।

বিষ্ণু নির্বাচন

রবীন্দ্রনাথ বিপিনে কান্তু গুৱা 'কান্তা' এই নামে কবিতা
অনুসূচিত পত্ৰ সুৱ অনুজ্ঞা কৰা গয়, বিষ্ণুৰ নামৰ সূচি ৩৬১৯
মণি পত্ৰে লিখিয়া কথা বললৈ, 'বলাঙ্গী' কবিতা এবং শুন্দ জাহ ৩
অনুসূচিত অনুমতি আছে, বিপিন বিষ্ণুৰ মণি অধিকার পত্ৰে
অনুসূচিত লিখ কৰা গয়, 'হৃদি', 'চন্দনা', 'বলাঙ্গী' প্রভৃতি কবিতা
সূচিত মণি, মৌলুয়ে কুমান কুমুদে - 'সুন্দুৰ অভিমা',
'কাজুৰ ছুয়া' প্রভৃতি কবিতায়, অনুসূচিত লিখা বলাঙ্গী অনুসূচিত
হো আলু জাহি, 'অঙ্গুষ্ঠ গড়ম', 'হৃদি-আমি', প্রভৃতি কবিতা
মণি। 'বলাঙ্গী' বলাঙ্গী রবীন্দ্রনাথ জাহ বিষ্ণু কবিতায় গচি
বলদেব কুমার বাড়-বাড় কুমি ইষ্টেড, উক বিষ্ণুপুরিতি
সেৱ জড়িবজাল আলোকপাত কুমুদ কুমু আমি বলাঙ্গী
কালুৰ বিষ্ণু, কিমুটি নির্বাচন কুলাদি।

ମୁଦ୍ରଣ କାନ୍ତିରୀଖ୍ୟ - ସନାକାର୍ଯ୍ୟ ବିଷୟରେ :-

ଧୂମିଳା :- ସାହିତ୍ୟ ବ୍ୟାକଙ୍କ ବିଚିତ୍ର ଅବିଜ୍ଞାନ, କଥା ମହିନ୍ଦ୍ର ପାତ୍ରର
ତିରି ମାର୍ଗିତ୍ୟର ନାମଦିଲେ ତୌରେ ପ୍ରତିକର୍ତ୍ତା ସାହିତ୍ୟ ବ୍ୟାକଙ୍କ, ମାର୍ଗିତ୍ୟ
ଅମନ ଆମ୍ବା ଦିନଙ୍କୁ, ଚିତ୍ରର ଦ୍ୱାରା ଆମ୍ବା କୁ ଏହି ଏହି
ସୁଶିଳେ ବୀକ୍ରି - ପ୍ରତିକର୍ତ୍ତା ଯାହା ମୟୁର ବା ଆଲୋକର ଏହି ଘୋଟିନି, କବିତା
ଗଲ୍ପ, ଚକ୍ରକ୍ରମ, ମାଟକ, ଅଧିକ, କ୍ରୂରକାହିଁନି, ମୁଣ୍ଡ, ହୃଦୟ, ବିନିଷ୍ଠା
ପ୍ରତି ବନ୍ଦାର ମୁଣ୍ଡ ଦିଲୁ ତିରି ଏହି ଏହି ଦିଲେଇ ତୌରେ ମୁଣ୍ଡ ଦିଲ୍ଲୀ,
ମୁଣ୍ଡର ଜାହାମର୍ମଦା ଓ ହୃଦୟ କ୍ରୂରକାହିଁଲେ ଏହି ଦିଲେଇ ତୌରେ ମୁଣ୍ଡ ଦିଲ୍ଲୀ,
ବୀକ୍ରିନାହେଲେ ପ୍ରତିକ୍ରିଯାବଳୀ ପାଇଲା ବସନ୍ତ, 'ରାତିକାଳୀ', 'ରାତିକାଳୀ', 'ରାତିକାଳୀ',
'ବନାରା', 'ମଳାତାଳା' ଅଛନ୍ତି ଅଧିକ କଥା ଦୀର୍ଘର ଅଭିଭାବକ ପାଇଲା କିମ୍ବା
ରାତିକାଳୀ କାନ୍ତିରୀଖ୍ୟରେ ବିଚିତ୍ର ପଢ଼େ ତାଙ୍କ କବି ବ୍ୟାକ, ପାଇଲା ନିମ୍ନ
ଆଲୋଚନା ବ୍ୟାକ ୨୦୮।

୩) ଅନୁଚାର୍ଯ୍ୟ (୧୯୭୧ - ୧୯୮୧) ପିଃ

ଏହି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବଚ୍ଚାରୀଖ୍ୟ ୨୦୮ :- 'ବନ୍ଦୁରୀ' (୧୯୭୧)

'କବିକାରୀଖ୍ୟ' (୧୯୭୮)

'ଗ୍ରେହନ୍ୟ' (୧୯୮୧)

ଅଛନ୍ତି,

ଏହି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କବିତାରେ ବିଶେଷଳାଲ ଚନ୍ଦ୍ରି, ଜଞ୍ଜଙ୍ଗ ଜନ୍ମି, ପ୍ରମୁଖ କବିତା
ବନାରା ଅଜାର ଲେଖି କବା ବ୍ୟାକ,

২. উত্তোলন পর্ব (১৮৮২ - ১৮৮৬) টি:

এই পর্বের বাণাসুনি উপ : - "সন্তুষ্যাদীক্ষা" (১৮৮২) টি:

"প্রজেতাঙ্গীক্ষা" (১৮৮৬)

"চূম্বি ও লালা" (১৮৮৪)

"কাঢ়ি ও কুমুদ" (১৮৮৬)

অঙ্গুলি,

৩. অন্তর্মান পর্ব (১৮৯০ - ১৮৯৬) টি:

এই পর্বের বাণাসুনি উপ : - "মাঝী" (১৮৯০) টি:

"শ্রোমারজ্ঞী" (১৮৯৪)

"চোঙ্গ চুলী" (১৮৯৬) প্রচুরি,

৪. অন্তর্বর্ষী পর্ব (১৯০০ - ১৯১০) টি:

এই পর্বের বাণাসুনি উপ : - "কথা" (১৯০৫) টি:

"বৈকুণ্ঠ" (১৯০২)

"আবন" (১৯০৬)

"ভূমা" (১৯১০)

৫. জীবিতানি পর্ব (১৯১০ - ১৯১৫) টি:

এই পর্বের বাণাসুনি উপ : - "জীবিতানি" (১৯১০) টি:

"জীবিতান্ত্র" (১৯১৪)

"জীবিতানি" (১৯১৫)

এই পর্বে কবিতান্ত্রের ক্ষিপ্র অগ্রিষ্ঠতার প্রয়োগ ঘটে।

৬. বলাঙ্গা পর্ব (১৯১৬ - ১৯২২) প্রি:

এই পত্রের রচনাত্মক ২৫:- "বলাঙ্গা" (১৯১৬) প্রি:
"সামাজিক সংগ্রহ ক্ষেত্রে ক্ষেত্রে ক্ষেত্রে", (১৯২২)
"পুরোধা" (১৯২০), "মানুষ" (১৯২১) প্রি:
প্রতিচ্ছবি,

এই পত্র স্থুক হয়, কবিতা সত্ত্বেও ও সৌন্দর্যের অর্থে অন্তর্ভুক্ত।

৭. প্রনালী পর্ব বা শব্দকলিতা পর্ব (১৯২২ - ১৯৩৬) প্রি:

এই পত্রের রচনাত্মক ২৫:- "প্রনালী"
"ক্ষেত্রে ক্ষেত্রে",
"প্রতিচ্ছবি"
"অবিজ্ঞান",
"ক্ষেত্রে প্রতিচ্ছবি",

৮. অভিঃপর্ব (১৯৩৬ - ১৯৪১) প্রি:

অটো বুর্বু - ক্ষেত্রে ক্ষেত্রে, এই পত্রের রচনাত্মক ২৫:-
"শান্তি" (১৯৩৬) প্রি:
"আমার আদিগ" (১৯৩৭) প্রি:
"নবজ্ঞান" (১৯৪০)
"আলতা" (১৯৪১)
"মানুষ" (১৯৪০)
"প্রতিচ্ছবি" (১৯৩৬)
"ক্ষেত্রে ক্ষেত্রে" (১৯৪১)

উভয়ের বৈশিষ্ট্য, কীবীজাতীয় জীবনের কবিতা অন্তর্ভুক্ত হয়ে আছে এবং ক্ষেত্রের
সম্বন্ধে একের উপরেক অন্তর্ভুক্ত অর্থে বর্ণিত হয়ে আছে।

■ १० एकाका रुद्रिनाम्बुज अनुरुद्रुष्ट रामुन्मय, रामा,
१९७५ मार्च अध्यात्म ज्ञानि मृ, जिनि तेरे राजिय प्राप्ति
ज्ञेय, आस्त्रिति ज्ञवा, स्वत्राज्ञा, अंगनारुद्रा, गतिष्ठि-इत्याहि
किंचित् मन्त्र तुलिते सुनिश्च शत्रु ऐज्ञेय, जो रामामय, रामा
कान्तु रुद्रिनाम्बुज अवदान अपरिमित,

वलाकासं प्रवर्तीकाले कविता भावितिकाः-

— रुद्रिन अजितेर विमाय एति गतिनामै शीरु प्राप्ति, रामामय
— शीरु शीरु राम, शुद्र-शुद्र निष्ठारु सम्भव कान्तु, तेजी रुद्रिन
अजितेर प्रविलिति ओ तेजी ओ शीरु, धर्माति शोष तापिष्ठु शय
जिनि रामाले रामे द्युमिति, प्राप्तिके निष्ठारु जिनि शीरु शीरु राम
अजितेर विमाय विष्टिरु नाम कान्तु, उपर्युक्त जिनि शुद्र-शुद्र निष्ठारु
विमायि कान्तु राम्भुमि।

■ ११ रुद्रिन जीवन्ते अज्ञेयते, अजितेरि, रामा राम्भुमि,
ज्ञे निष्ठिपत्ते रामे रामित्ते निष्ठि नवीरु शीरु शुद्र-शुद्र-
द्युमित्ते नाम्भुमि रुद्रि द्युमित्ते अज्ञेयते सम्भूतीत्ते
ज्ञेय रामि, ‘अरुद्रिन अजितेरि, नामे नामे रामु नामित्ते रामा राम्भुमि,
द्युमित्ते नाम’ ओ चित्ते रामे रुद्राय तेमा द्युमि, ज्ञे रामामयि
आवश्य रुद्रिनि रामामयते सम्भूतीत्ते।

ପ୍ରଦୀପିତାମହେः ଅଶ୍ରିତୀଙ୍କ କାବ୍ୟର କବି ରାଷ୍ଟ୍ରେ ଏହି କ୍ଷୁଦ୍ରଜୀବି
ଆମାର ଦେଖି ଚିତ୍ର ଏକ-ଏକଟି ପୂର୍ବ ବ୍ୟକ୍ତି ହୁଏ ଦୂରେ ଦୂରେ, କବି ଏହି
ଏକ ଛୋଟା ଆମ ଚିତ୍ରିତିରେ ଅଶ୍ରିତୀଙ୍କ ଦୂରେ ଅଶ୍ରିତୀଙ୍କ ରୁଜୁଷେ ନୀ,
ଦୂରୋଧିତେ ଦିଲ ଏହା କବି ଏହି ଏହାତା ଜାଣି କବୁଦ୍ଧିଲାବ। ଏହା
ଜୀବନିତି ଜାନନ୍ତି କାହିଁଥିଲାବିଲୁ ଜାଣି ନାହିଁ, କବି ନାହିଁ, କ୍ଷୁଦ୍ରଜୀବି କବି
ଆମାର ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟ ବାବୁ ଏହାଟି ପାଇଁ ଦୂବିତାମା, ଯସକୁ ଲିଖିଲିଲାବି:—

“ଆମାର ଦୂବିତାମା, ଆମି କି ଜାଗଳ ହେବ ମିଥ୍ରିତିଲାମା
ଜୀବାର ଚିତ୍ତ ପଢ଼ୁ ଜୀବାତା ତୁମି ହୋଇ ଏହାହି ବୁଝି ବୁଝି ଦେଲୁ,
ଏବଂ ମନେ ହୋଇ ହୁଏ ଅନୁଷ୍ଠାନ କାହୁଦୁ, ଆମି ନିବିନ୍ଦା ଯାଏ ହେବିଲାମା;

ଆମାର ହେବୁ ଭବିତେ ମନ୍ତ୍ର ହେବିଲେବିନ ଏମ ପଞ୍ଚାତ୍ମକ ପ୍ରାଚ୍ୟ
ମତ ଏମ ପଞ୍ଜିଲି, —— ଜୀବି ଏହାର ଜୋକପିର ପୁଣା, କେ
ମାତ୍ର ପାଖିଲା କିନ୍ତୁ ଦିଲ ନା, —— ଏହି ଜୀବ ବାହୁ କି; ଏହେ ତଥାପି
କେବା ଏଥିର ଓ ଆମାର ହୃଦୟର ମଧ୍ୟେ ତତ୍ତ୍ଵ ବନ୍ଦେ, “ଦୂବିତାମା” ପଢ଼ି
ପଢ଼ି ଆମାର ମନ କ୍ଷେତ୍ର, ଚକ୍ରର ହେବୁ ଓଡ଼ି, ଏହା ଜୀବାର ଜୀବା
ପୁଣ୍ୟତା ଲାଗୁ ହୁଏ ନା”, ——

ପ୍ରକାଶ ଚିତ୍ରିତ ପ୍ରେସ, ଲୋକ. ଉତ୍ତମତାର ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ, କ୍ଷୁଦ୍ର
ଏ ଲୋକର ଅବିନିତ ବାଣ୍ୟକାଳୀ, ଏହେ ଲୋକରେ ପାହିଚି ପାଇଁ—
“କବି ଓ ଜୀବା, ବାନ୍ଧୁମଧ୍ୟେ ଏହା ଫୁଲ ହାତେ ଦିଲା, ପାହିଚି, ଜୀବ ମୁହଁ
ହେବ, ମୁହଁ ଥୋକ ଜୀବା ଲିବା ଓ ଅନୁଭୂତି କାହାରେ ଦୀର୍ଘି ଦୈତି
ବାସନ୍ତ ବାବୁ ନା, ତିରି ମେ ତ ଫୁଲ ଭାବର ନାଁ, କ୍ଷୁଦ୍ର ତୀର ବାଜି

ଅକ୍ଷେ ଜାତିମାନ ରାଜୁ ଥାଏ, କବି-ଶୀଘ୍ର କୋ ଅଭ୍ୟାସେ ଚରମ-ପରମ
ବଳ ସୀମାର ଲଙ୍ଘନ ଗା, ଡେବ ଶୀଘ୍ର ଓ ସ୍ଵତତ୍ତ୍ଵକ ବାସ-ବାସ କବିତି ଶୀଘ୍ର
ଆୟାତ ଗତେଦେ, “କବି ଓ ଶୋଭାର କବିତିପୁଣିଲିଖି ବାସ ବାସ ଲିଖିଲେ ହେ
ଜଳେ ଛିତ୍ର ଉଦ୍‌ଘଟନା, “କବି ଓ ଶୋଭା” ଯେବେ ବିଧିବ୍ୟବ ବିନ୍ଦୁତାର
ଅନ୍ଧାନ ପାଉଥିବା ଥାଏ,

ପଦକବିତାର ବବି-ଶୋଭାବ୍ୟବୀ, ଟିକ୍କା, କୁଳି ରେ ଆମା କୁଣ୍ଡି
କବିର ପାତ୍ର ଶୋଭାଚିତ୍ର ହାତିଜଳି କବିଲିଖି ଅନ୍ତରେ ଦୈନିକ,
ଦୈନିକ ଅଭ୍ୟାସେ ପଥ ବାସ-ବାସ କିମ୍ବି ଦେଖାଯିଲେ ତୀଏ ମହ ଦୈନିକରେ
କିମ୍ବି ଅନ୍ତରେ ମହି ଦେଖାଯିଲେ କବିତା ଶୋଭାବ୍ୟବ ମହି
ପାତ୍ରିଷ୍ଟ କବିତାରେ, କୁଣ୍ଡି ଓ ଅନ୍ତରେ ମହି କିମ୍ବି ହେ ହେ ହେ
ଶୋଭାଚିତ୍ର ହାତିଜଳିବୁ ଅଳଟେ ଦିଲି କବି ଓ ଶୋଭା, ଅନ୍ତରେ କବିତାରେ
ଦେଖା ଥାଏ, କବି କିମ୍ବି-କିମ୍ବିମନ ବୁଝାଯିବ ବକତ ମହ ମିଳିଲେ ମହ ଏ
ଏଣ ଅଛୁଟ ଅଛୁଟ ଥାଏ, ଏକଟେ ଦୋଷିନ ଏଣ ବାବିନିତାର ଦେଖାଯିଲେ ଥାଏ
ବାବାର ଖୋଲା ଜାତ ମୁକ୍ତି ଅଛେ ଚାହିଁ, କବି ଜାହାଜିବୀ, ଆବ୍ୟାତ୍ୟ,
ଖୋଲା ଥାଇଲେ “ମାନ୍ଦିଲ୍ଲ”, ମାନ୍ଦିଲ୍ଲ କିମ୍ବି ମହାମା ଲିଖେ ଖୋଲା ମହାତ୍ମା
କିମ୍ବିଲେ ହଲନ, ତୌର ଫୌଲ କବି ପ୍ରାତିନିଧି ମହି କିମ୍ବି କିମ୍ବି କିମ୍ବି କିମ୍ବି
କିମ୍ବି, କିମ୍ବି କିମ୍ବି, ଏ କିମ୍ବି କିମ୍ବି କିମ୍ବି-କିମ୍ବି-କିମ୍ବି କିମ୍ବି
ଏହି ମହ ଏହି ଏହି କିମ୍ବି କିମ୍ବି କିମ୍ବି କିମ୍ବି କିମ୍ବି କିମ୍ବି
ମହ କବିତାରେ ତୌର ଫୌଲ କବିତାରେ, ଅନ୍ତରେ ଏହି ଅନ୍ତରେ ଏହି
ଅନ୍ତରେ କବିତାରେ ତୌର ଫୌଲ କବିତାରେ, ଅନ୍ତରେ ଏହି ଅନ୍ତରେ ଏହି
ଅନ୍ତରେ ମୃଦୁ, ମୃଦୁତ୍ୱରେ, ମୃଦୁତ୍ୱରେ ଏହି କବିତାରେ, ଏହି କବିତାରେ
ମନର ଦୂର ଅନ୍ଧା ଏହି ଏହି କବିତାର ଅନ୍ଧା ଦୂର ପାରିବା ଥାଏ

ଏ ପ୍ରକଳ୍ପ କୋର୍ଡ କବିତାଙ୍କେ ଦୟା ଗୁଣ ନା, ଏବଂ ପ୍ରକଳ୍ପଙ୍କୁ ମୋହନୀୟ ଏମିଆ ଟୈଲିନୀ, କଞ୍ଚକା ଅନ୍ତର୍ମିଳି କବିତାଙ୍କେ ବିଭିନ୍ନ ଅନ୍ତର୍ମିଳି ହେଉ ମଧ୍ୟ ହେ ବିଚିକାମେ ଆରାମ ପାଇଦୁ, ଆହେ ଦୀପନ୍ଦରେ କୃଷ୍ଣନାଥର ଜୟପ୍ରମାଣି ଓ କିମ୍ବୁମୁଳି ସିଂହ ପାଇଦୁ।

★ ଶ୍ରୀଜାଯମ୍ବନ ପାତେ ସୁରୀଳ ମାନ୍ୟମହାତ୍ମା :-

‘ମୁଖ୍ୟ’ ରେ କବି ଏକ ନୃତ୍ୟ ଅନୁଷ୍ଠାନରେ ଶୁଣା ଜାମା ଦେଖେ।
କିନ୍ତୁ, ମୁଁ ଗୋଟିଏ ଜାତେ ରୀବି ପରମାଣୁ କହେଛେ ଏହି ନଥ୍ୟ, କିନ୍ତୁ
କହେ ଓ କବି ଅନୁଷ୍ଠାନ ଘଟେଇ। ‘ଭାଗ୍ୟ’ ପରି କବି ଏହି ସ୍ଵରେ ହେଉଥିଲା
ହୁଲା। ମୁଁ ବର୍ତ୍ତରେ ପରି ବହୁ କବି ସ୍ଵରେ କହେ ନିବେଳେ ଫୁଲିଯିବାକୁ
ଏ କବିଙ୍କି ଆମବା ପଞ୍ଚାଶ ପୁଣି ଅନୁଷ୍ଠାନରେ କହା, ଏଣୁ ଉପରେ
କେବଳିର ଲୋକର୍ଥୀ ନଥ୍ୟ ଓ ମନ କହେ କେବଳ ବାହାର, କୁହାରୀର ଶୁଣିଥିବା ବୁଲ
ନିବେଳେ କିମ୍ବାକିମ୍ବି ବହୁତ, କିମ୍ବାକିମ୍ବି ଦୁଇ କିମ୍ବା ପାଇ କେବଳ
କାଳକ୍ରମାବ୍ୟବର କହେ ଅନୁଷ୍ଠାନେ ନାହାର, ଏହି କିମ୍ବା ଲୋକର୍ଥୀ ମିଳିତ
କାଳକ୍ରମାବ୍ୟବର କହେ ଅନୁଷ୍ଠାନେ ନାହାର, ଏହି କିମ୍ବା କାଳକ୍ରମାବ୍ୟବର
କାଳକ୍ରମାବ୍ୟବର କହେ ଅନୁଷ୍ଠାନେ ନାହାର ? କିମ୍ବା ଏକ ଅଧୀନ ଗଲିଯି, କେମୁ ଓ କାହାର କବି
କାଳକ୍ରମାବ୍ୟବର କହେ ଅନୁଷ୍ଠାନେ ନାହାର ? କିମ୍ବା ଏକ ଅଧୀନ ଗଲିଯି, କେମୁ ଓ କାହାର କବି
କାଳକ୍ରମାବ୍ୟବର କହେ ଅନୁଷ୍ଠାନେ ନାହାର ? କିମ୍ବା ଏକ ଅଧୀନ ଗଲିଯି, କେମୁ ଓ କାହାର କବି
କାଳକ୍ରମାବ୍ୟବର କହେ ଅନୁଷ୍ଠାନେ ନାହାର ? କିମ୍ବା ଏକ ଅଧୀନ ଗଲିଯି, କେମୁ ଓ କାହାର କବି

ଏ ଲୋକମାତ୍ର କଥା ହୁଅବେ କଥ ଚିହ୍ନ ମା ବିନିଃ କଣ ଦେବତା ଜୀବା
ଜଗାକୁ ମୂର ଓ ରହିଲା,

“ମୋହନ୍ତି” - “ଛିଆ” - “ବାଲକାଳ” - “ଶନିଯାତ୍ର” - “କବି” ଓ “ଅକ୍ଷତି”
କବି, କ୍ଷେତ୍ର ଓ ଲୋକମାତ୍ର କବି, କବିଙ୍କି ବାଲକାଳର କବି ଦେ ଶନିଯାତ୍ରି,
“ଶନିଯାତ୍ର” - ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏକ ଛିଲ୍ଲ କାହାରେ ପରିଷ୍ଠିତ
ହୋଇ ଗାଏଇବେ, ଆ ଛିଲ୍ଲ ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପ୍ରକାଶ ନାହିଁ, ଲୋକାଳ୍ୟ - ମୁଖ୍ୟ - ଲୋକାଳ୍ୟ
ଆନନ୍ଦ ପକଳ ବୁଝେ ଏହା କିମ୍ବି ଏହା ହୁଅ ଛିଲ୍ଲ କବି ରେ ଏହା ଲୋକାଳ୍ୟ
ମୁଖ୍ୟପତ୍ର ପାରାବ କ୍ଷେତ୍ର ଶୁଣି ପରି, ଏହା ବୁଝେ ଏହା ଲୋକାଳ୍ୟ,
ଏହା ରେ ଏହା କାହାରି, ଏହା ଅନ୍ତରେ “ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ” ରେ ଏହା
ଛିଲ୍ଲ “ଶନିଯାତ୍ରି” ରେ କ୍ଷେତ୍ର କିମ୍ବି ବାହି, ପରିଷ୍ଠିତ ମାଧ୍ୟମରେ ଏହା
“ଶନିଯାତ୍ରି”, ଛିଲ୍ଲ କିମ୍ବି - ଅକ୍ଷତି ଗାନ ଏବଂ ଆହୁତି ବାଧ୍ୟମାତ୍ର ଏହା
ଓ ବନସିର ଉଡି ଛିଲ୍ଲ, “ଶନିଯାତ୍ରି” ଅଭ୍ୟବନ୍ତି ଗାନ ଜାହାନ ହୁଏ କିମ୍ବି
ଅକ୍ଷତ ପାରାବ ଏହା ଶନିଯାତ୍ରି କି ଜାହାନ, ଏହା କିମ୍ବି ଅଭ୍ୟବନ୍ତି
ଅନୁଭବ ବନସିର ଏହା କି ଅକ୍ଷତ ଆହା, ଶନିଯାତ୍ରି ଏହା ବେଦବାଦ ଶନିଯାତ୍ରି
ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏହା ପାଦେ କ୍ଷେତ୍ର ବନସିର ପାଦପାଦ ଶନିଯାତ୍ରି
ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏହା କବି ଶନିଯାତ୍ରି ନାହିଁ, ନାହିଁ, ଲୋକାଳ୍ୟ ଶନିଯାତ୍ରି
ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏହା ଅନ୍ତିଶ୍ଵରାତ୍ମକ ଶନିଯାତ୍ରି ନାହିଁ, ପାହି ମହିଳାର ରୋଧି ଓ ତଥା
ଲୋକାଳ୍ୟ ରୋଧି ଆଜାନ ଆଜାନ ପାହି ନା, ପାହି ମହିଳାର ରୋଧି ଓ ତଥା
ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏହା କବି ଶନିଯାତ୍ରି ନାହିଁ, ପାହି ଶନିଯାତ୍ରି ଓ ତଥା
ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏହା କବି ଶନିଯାତ୍ରି ନାହିଁ, ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏହା କବି
ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏହା କବି ଶନିଯାତ୍ରି ନାହିଁ, ଶନିଯାତ୍ରି ରେ ଏହା କବି

ଦେ ହୃଦୀ ଓ ମନ୍ତ୍ରି . ଜାପାନ ଓ ଆନନ୍ଦ ଗାନ୍ଧି ଥାଏ - 'ଶୀତଳାଲ୍' ; ଅଣ୍ଡିଙ୍କି
ଶୀତଳର ମଧ୍ୟ ଅରାକୁର କିମ୍ କାହା ଶୀତଳାଲ୍' ଏବଂ 'ଶୀତଳି
'ଶୀତଳାଲ୍' . ଅପରେ ଏକଥା କାହାର ଜାମା କୋର ଦ୍ଵିତୀୟ ଦେ ।

ଫଳ-ଶୀତଳାଲ୍ - 'ଶୀତଳାଲ୍' - 'ଶୀତଳି' ଦେ ଅକ୍ଷା ରାତ୍ରିରେ

ଏଥି ମରାଟିଲୁହ ଜାମ, 'ହୃଦୀ' ଏଥେ ଜାମା କୁଣ୍ଡି ଦେ ରାବି ଛୁଟୁ
କବିତାର ଅଛି ? ଅଞ୍ଚଳା, 'ଶୀତଳାଲ୍' ଦେ କୁଣ୍ଡି ଛୁଟୁ ଅଛି ? ଜାମା
ପିଲେ ? ଖାଟକ ଏବଂ ଶୁଭେ - ଶୁଭେ ଉଠେଇ, କିମ୍ବୁ କୁଣ୍ଡି, ଦୂରାତ ମାତ୍ର
କାହା ପାଉଥାର ଦୁଃଖ ଶୀତଳାଲ୍କି ଗାନ୍ଧାରୀଙ୍କି ଘେରି କାହାର ହିମା ଉଠେଇ
ତଥା ଜାମା, ପାବିଲିମ୍ ମହିନ୍ କବି ତଥା କୁଣ୍ଡି ମହିନ୍ ଲାଭ ରହିଲେ
ଉଠେଇ, ନାମାତ୍ର ରାବି କାହା ଏବଂ ଉଠେଇ, କୁଣ୍ଡି ଏବଂ ପାତିଆ
ମଧ୍ୟରୁ ଥାଏଲା, କୁଣ୍ଡିରେ ଏକଟେ ଶ୍ରୀମଦ୍ - କୁଣ୍ଡି ଶ୍ରୀ ଶୀତଳାଲ୍କି, ତାମି
ଶାନ୍ତି ଲାଭ କବି ହୁଏ, ଶ୍ରୀ - ଜାମାତ . କିମ୍ବୁ ମହିନ୍ କବି କିମ୍ବୁ
ଏ ମହିନାର କବି ଶୀତଳାର ବନ୍ଦେଶ, ଏବଂ କୁଣ୍ଡି ମହିନ୍ ମହିନ୍ କିମ୍ବୁ ଏ
କୁଣ୍ଡିର ବନ୍ଦେ କିମ୍ବୁ କୁଣ୍ଡି ଏବଂ କୁଣ୍ଡି, ଶ୍ରୀ, ଜାମାତ, କୁଣ୍ଡି,
ଏ ଦୂରତାରେ କୁଣ୍ଡି ଏବଂ କୁଣ୍ଡିର କାମିହି କାହା ଉଠେଇ, ଜାମାର ମିଳି
ଏ ଅନ୍ଧରାତ୍ରେ କୁଣ୍ଡି ଏବଂ କୁଣ୍ଡିର କାମିହି କାହା ଉଠେଇ, ଜାମାର ମିଳି
ଅନ୍ଧରାତ୍ରେ କୁଣ୍ଡି ଏବଂ କୁଣ୍ଡିର କାମିହି କାହା ଉଠେଇ, କବି ଶୀତଳାର
ବନ୍ଦେଶ, ଏବଂ କିମ୍ବୁ ଏବଂ କିମ୍ବୁ ଏବଂ କିମ୍ବୁ ଏବଂ କିମ୍ବୁ
ମାତିନା କୁଣ୍ଡିର ବନ୍ଦେଶ, ଜାମାର, କାମାକୁରେ ଏବଂ ମାତିନା ଏବଂ କବି
ଶୀତଳାର, ନା ରାତ୍ର ପାତିଆ, ଏ କବା ତଥା କୁଣ୍ଡିର ମହିନ୍ କିମ୍ବୁ
ଏବଂ କିମ୍ବୁ ଏବଂ କିମ୍ବୁ ଏବଂ କିମ୍ବୁ ଏବଂ କିମ୍ବୁ ଏବଂ କିମ୍ବୁ

ମୁଁ ଖିଲୁ, ମୁଁ ନୀରୁ, ମାଧ୍ୟମକୁ ଆଗୁ, କବି ତେ ଜୀବତ ମାତ୍ର
କଷଣ ଛାପିବା, •ଶୈଳାଳିଙ୍କି ମହୁଲିଙ୍କ ତେ କୁଳି ନିଃ-କବି
ପେ ମାତ୍ରିକ କଷା ଦେଖିବ ବାବି ହୁଏ, କବିକୁ ଅବିଭୂତ ହୁଏ ଏହା
ହୁଏ ତା •ଶୈଳାଳିଙ୍କ ତେ କାଳୁ ଛାପିବା, କୁଳି-କବିଶିଳ୍ପ
ନାମ ଓ କବିତା କାମକଥା ଶବ୍ଦ ଆଲୁରେ ବିନିଯୋଗ କେବା ମହୁ, ଶୈଳାଳିଙ୍କ
ଅବିଭୂତ ହାତ ବରେ ବାବା ଜାମୁଆ, ମହିଳା ବାବା ବବୁ, ଜାମୁଆ
ଅବେଳା ଉଚ୍ଚାର ବାବା କବିକା,

"ବାବା ପାଠେ କୃତ୍ତିମ ଭାବରେକବଳ : -

•ଶୈଳାଳିଙ୍କ ପରେ କୁଳିଙ୍କ ମହୁ ମାତ୍ରି ଏକ ହୃଦୟ କାଣ ମୁଖରେ
ଜୀବନାତ ହୁଏ, ଏହି ହୁଏ - •ବାବା, ୧୯୨୨ ବାବାରୁ ଆମାର ମାତ୍ରି
ହୁଏ •ଶୈଳିମଳ୍ପା ହୁଏ ହୁଏ, •ଶୈଳିଲିଙ୍କ ମହୁଲିଙ୍କ ପାଇଁ ବାବିତା ଆମା
ହେଲେ କାହିଁକି ମାତ୍ରି ହୁଏ କବି, •ଶୈଳାଳି-ଶୈଳିମଳ୍ପା, •ଶୈଳିଲିଙ୍କ
କବି, ହୋଇ •ବାବାରାମ୍ପା ତୁମ୍ଭ ଯକ୍ଷମାତ୍ର ରାଷ୍ଟ୍ରରେ, ତା ବାହୁଦେବ ଏକ ବିଶ୍ଵମହା
ଶୁଭାବ୍ଦ,

ଦେଖିବାକୁ ମହୁ ମହୁ, ବାବା-ବିନାମୀ ମହୁ ଦିଲ୍ଲି
ଦୀର୍ଘ ଅଭିଭାବିତ କାଣୁ, ଏହା ଲୋକା କିମ୍ବା ମହି ଦିଲ୍ଲି କିମ୍ବା ମାତ୍ରିକବଳ
ରାଷ୍ଟ୍ର ପାଇଁ ତା, ଉତ୍ତର ପରେ ଜୀବନାତରେ ଏବାମତ୍ତେ ଆମ୍ବା ଏହି ଶବ୍ଦରେ ଆମ୍ବି
ମହୁପାତର କାଣୁ, ଏହି କାଣୁ ମହୁ ଦିଲ୍ଲି ଅନ୍ତରେ ଦୁଇବା ଆବଶ୍ୟକ ହୋଇ
ଆମ୍ବା ବା ଆମ୍ବାରେ ଉପାଇଁ ତା, ଏହି ମହୁରେ ମହୁରେ ବାବା, ଏହି କବି
ଦୀର୍ଘତିରେ ଏହି କବି କାଣୁ, ଆମ୍ବା ଯୁଗର କୁଳିଙ୍କିମାର •ଶୈଳାଳିଙ୍କି, ଶୈଳିଲିଙ୍କି
ଶୈଳିମଳ୍ପି, ଶିଥି କମରାହି କାଣୁ କିମ୍ବା କାଣୁ କେବାରେ ଚବ୍ରାବ କବି

ମିଳିବା ନିର୍ମାଣ ହାତେ, କବିଲୁହି ଲୋ ପ୍ରସାଦ ଥାଏ, କିନ୍ତୁ କୀଟାଳରେ ଜା
ଇବା ନା, ରାଜନ ନିର୍ମିତ ଚିତ୍ରକଟା; ଔର, କିମ୍ବା ପଥିତ କବିଲା କୁଳ ନିର୍ମିତ
ଅଶ୍ଵରୁଷ ଜୀବିତ ବାଧାରେ, ଶୁଣ-ଶୁଣ କରିବୁ ବ୍ୟାପାରିକ
ରୂପରେ ଏହି ଆମ୍ବାଳ କାହାରେ ଏ କରିବି ପାଇବା ହାତେ ହାତେ, କହିବା କେବଳିବା
ଏବଂ ମୁଁ-ମୁଁ ବାବନ ନିର୍ମାଣ ହାତେ, କିନ୍ତୁ ହେ କିନ୍ତୁ ଆମ୍ବା କାଳିକୀର୍ତ୍ତି
ଆମର କେବଳ ଜୀବିତ ଦୈର୍ଘ୍ୟ ବାଧାରେ, କବିଲୁହିର ଅଶ୍ଵ
କିମ୍ବା ଏବଂ କୀଟାଳ ଏହିକିମ୍ବା ବାଧାରେ, କୀତିଲୁହିର ଅଶ୍ଵ
କିମ୍ବା ଏବଂ କୀଟାଳ ଏହିକିମ୍ବା ବାଧାରେ ହେବାର ମାତ୍ର
ଅବଧି ଉପରେ, କିମ୍ବା ଆମର ଜୀବିତ ପରିମା ହୋଇ ଆମର କାଳିକୀର୍ତ୍ତି
ହାତେ ଜୀବିତ, ଏହି

ବିଭିନ୍ନ ଶିଳ୍ପ କରିବାରଙ୍ଗାମୀ ନରତମ୍ଭ ଲୋକ ଅଟେଣ୍ଟି ମୁହଁ
ପ୍ରାଚୀନ ପ୍ରକଟିକ ପାଇଁ ପାଇଁ ମର୍ମି ନିର୍ମାଣ କରିବାରେ ଦେଖିବା
କେବଳ ଶୀତି ଶୀତି ପ୍ରକଟିକ ଲୋକ ବାଧାରେ କୋଟି ରହି ନିର୍ମାଣ, କାହାର
ଗତିବିଦ୍ୟରେ କାହା, ଏହି ନିର୍ମାଣ କରିବାକୁ ପ୍ରକଟିକ କରିବାରେ
କିନ୍ତୁ କ୍ଷାତ୍ର ଅନୁଭବିତ ହେବାର କୋଟି, ତାକୁ ବାଧାରେ ଏହି ପାଇଁ କାହାର
ଅମାର ଉତ୍ତିଷ୍ଠିତ କ୍ଷୁଦ୍ର କ୍ଷୁଦ୍ର ହେବା (ଦୁଇ, କିମ୍ବା), ଆମର କାହାର
ଚକ୍ରକ କ୍ଷୁଦ୍ର କ୍ଷୁଦ୍ର ହେବା (ଚକ୍ରକା, ବଳକା), ଏହି ଗତିକୁ ମିଳି କିମ୍ବା
ଏମରେ ବଳକାରୁରେ ଶୁଦ୍ଧ ଜାତୀୟରେ ପାଇଁବିତ୍ତି କୋଟି ଅଧିକ
ଆମର, ଏହି କାହିଁମ୍ବା ବଳକା ଶୁଦ୍ଧ ରହିବା, ଏ କବିଲୁହି ବିଶ୍ୱାସ
କୌଣସି, ମୁହଁ-ମୁହଁ-ଅନୁଭବିତ ମାତ୍ରକ ଓ ଅତି ବ୍ୟାପି ଶୁଦ୍ଧିତ ଜା
ତୀତୀତୀ, ମୁହଁ-ମୁହଁ-ଅନୁଭବିତ ମାତ୍ରକ ଓ ଅତି ବ୍ୟାପି ଶୁଦ୍ଧିତ ମାତ୍ରକ,
କୀତିଲୁହି, କୀଟାଳର ଅନ୍ତିତାମାର ମାତ୍ରକ ଓ ଅତି ଶୁଦ୍ଧିତ ମାତ୍ରକ,

‘କାନ୍ଦାର ଶ୍ରୀକୃତୀ, ଶ୍ରୀମତୀ ବୀଚିମାଲ୍ୟା, ଶ୍ରୀକୃତାଳୁଙ୍କ ଏହା ଆମର
ଶ୍ରୀ ପାତେ କାହା ପୂଜା ନା, କାନ୍ଦାରାମାଲ୍ୟା ଲ୍ପାକା, ‘କାନ୍ଦାର ସୁଦୁରାତ୍ମକ ଏହା
ଏହାରଙ୍କ ଦୁଇ, ଡେବୁର ଏହା କାନ୍ଦାର ଦୁଇ ପଦାର୍ଥ, ଏହା ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କି କୁଣ୍ଡଳୀ
ମହା କିରଣ୍ଦ ଏହା, କୋ ଅଶୋକ ପାଇଁ କିରଣ୍ଦ ଏହା ନିର୍ମିତ
ଶ୍ରୀମାର ଏହାରେ, ମୁଖ୍ୟମ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଶ୍ରୀକୃତୀମାଲୀ କିରଣ୍ଦ ଓ ରାଧାକୃଷ୍ଣ ବନକ
ବନର କ୍ଷେତ୍ର, ବିନାର ଶ୍ରୀ ମହା ରାମ କିରଣ୍ଦର କାନ୍ଦାର ମୁଖ୍ୟମାନଙ୍କିମାନଙ୍କି
ପରମାତ୍ମା, ‘କାନ୍ଦାର ଅଭ୍ୟାସ କାନ୍ଦାର ପ୍ରଭ - କୋରନ - ଶ୍ରୀମତୀ ପରମାତ୍ମା
ପରମାତ୍ମା ଏହାରେ ପ୍ରଭାତର କାନ୍ଦାର କାନ୍ଦାର ଏହାରେ ଏହାରେ,

— o —

ବଳକାରୀ ଅନୁକରଣ :-

“ବଳକା” କାହୁଡ଼ି ପତିନିଙ୍କ କଥା, ବୃଦ୍ଧିନାମ ଚିତ୍ରନିତି ଏବଂ
ଉପରେ ଚିଲ୍ଲା, ଏ କଥା ଆମଣ ଜାଣେ ଆଖି ଫେବ୍ରୁଆରୀ ୧୯୧୨ ମାର୍ଚ୍ଚ
ଆଁର “ଜାଗଯବ” ଓ “ଅଚଳାମ୍ବନ” ଦେଇ ଥିଲା, ତଥାପର ତିଥି ନାମରେ ଜମ ବରଷର
ଓ ନାମରେ ଶବ୍ଦିନରେ ମଞ୍ଜି ପବିତ୍ର ହଲ୍ଲା, ପାତାନିତି ଅକ୍ଟୋବର ୨୦୧୨ ଥିଲା ୧୯୧୬
ମାର୍ଚ୍ଚ ତିଥି ଲୋକ ପ୍ରକାଶ ଦେଇଲା, ଅଥବା ପାତାନିତି ମହାମେଳା, ମୁଦ୍ରଣ
ଦେଇ ଥିଲା, ତାଙ୍କ ବୃଦ୍ଧିନାମ ପୁରୁଷର ଓ ମହିଳା ଦେଇଲା ବାହାନେ, ତାଙ୍କ ମହିନେ
“ବଳକାରୀ ବବତୀ ଶୁଣି ଏହା ଏହା ଏହା ବବତୀ ଜାଗନ୍ତ ବବତୀ, ଅବଶ୍ୟକେ
୧୯୧୬ ମାର୍ଚ୍ଚ “ବଳକା” ଛିପା ଥିଲା ।

ବଳକାରୀ କବି “ମୁଦ୍ରଣର”, କହେଛି କବିତା ମିଶର ଓ ଶୁଣ

ବଳକାରୀ, ଅକ୍ଷୟ କବିତାଟି ଶାର୍ଵିନିକ୍ରମ ଦେଇ (୧୦-ଟାଇପ୍ ୧୩୨୧),
କହେଛନି ମହା ପୁରୁଷର ଓ କନ୍ଦାରେ ନିଯି କବି ବ୍ୟାକର୍ତ୍ତା କହାର ମେଲେ, ଯେହି
ଆନନ୍ଦ ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟ ମହିଳା ଏବଂ ଦୋଷ, ବ୍ୟାକର୍ତ୍ତା (ଦେଇ ଡ୍ରେପ୍ ୧୩୧୩)
ଏବଳକାରୀ କବିତା ଦେଇ, ଧ୍ୟାନ ପୁରୋହିତ ମହାମୁଦ୍ରା ଦେଇ ଥିଲା, ତାଙ୍କ
ଦ୍ୱୟାକ କବି ମନେ ଖର୍ବ-କୁ ପରିଭାସ ଦେଇ ଥିଲା, ଏହା, ତାଙ୍କ
ଦ୍ୱୟାକ କବି ମନେ ଖର୍ବ-କୁ ପରିଭାସ ଦେଇ କବିତା, ଏହା
ତୁମ୍ଭୀ କବିତାଟି ଲିଖିଲାନେ, ୧୨-ଟାଇପ୍ ଦିଅଲେ ତୁମ୍ଭୀ କବିତା, ଏହା
ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧିନାମ୍ବେ ମନେ ପରିଭାସ ଓ ଦେଇଲା ଥିଲା, ତାହା କବିତାଟି ପାଇଁ
ଦ୍ୱୟାକ ଥିଲା, ମୁଦ୍ରଣ କବି ମନେ ଉଠି ଦୋଷ ।

ଭାରତୀ କବିତାରେ ଏହା ପଦ, ଶ୍ରୀମତୀ ମାତ୍ର ହେଉଥାଏ, ବୃଦ୍ଧନାମ
ପାହନ୍ତି ଯେତେ ପଦନ, ଉତ୍ତିଷ୍ଠିତ ଶୀଘ୍ରମେ ଲିଖିଥାଏ ଫୁଲ ମାତ୍ରାଙ୍କ,
ବଳକାରୀ ଏହା କୁର୍ରନାମ ମାତ୍ରିନିକ୍ରମ କିମ୍ବା, ‘ବଳକା’ କବି ଲିଖିଥାଏ
ଏହା ଘଣାମ,

□ ୧୭୨୧ ମାର୍ଚ୍ଚ ତେ ଖେଲ ବଜୀର ମାତ୍ରି ପରିଷଦ୍ର ବାଧୁମୁଖ
ଦିଲ୍ଲୀ ମହାନ୍ତର ପଞ୍ଚାମିତି ଅନୁଦିତ ବୃଦ୍ଧନାମ ହେ, ଏହି ଏହି ଖେଲ
ବଳକାରୀ ଏହା କବିତାଟି ହେଉଥାଏ, ତାମର କାର୍ତ୍ତିକ ମାତ୍ର ପରିଷଦ୍ର “ବଳକାରୀ
ଆର କୂର କବିତା ହୁଏ ଥିଲା”

□ ଅକ୍ଷୟ କବି ଏନାହାର୍ଦୁ ୨୧ ମେ ଆହିନ, ‘ବୀତାନିକି ହୁଏଇ
ଜାନ କୁରା କବଲନ, ‘ଗୀତାଲିଖି ମଧ୍ୟରେ ଏନାହାର୍ଦୁ ଲୁହା, ଦ୍ୱାରାକିମ୍ବି
‘ବୀତାନିକି କୁର କବିତା ଲିଖେ କବି ‘ବଳକାରୀ ୮୦୯ କବିତା ଲିଖିଲୁହା,
ଏହି କବିତାଟି ୨୦୯ ପ୍ରଦିତ, ଦ୍ୱାରାକିମ୍ବି ୧୫ ରୁ ଲାତିକ କବି ‘ବଳକାରୀ ୧୦୯
କବିତା ‘ମାତ୍ରାଙ୍କାମ’, କବିତାଟି ଲୁହା।

□ ଅନ୍ୟଥାରେ କବି ଆଜା ଲେଖ, ଆଜା କେଣେ ଜ୍ଞାନବାଦୀ
କିମ୍ବି ୧ ବଳକାରୀ କବିତା କବି ଲେଖ, ୨୦୯ କବିତାଟି (ଚନ୍ଦ୍ରା)
ଏନାହାର୍ଦୁ ଦ୍ୱାରା ଲୋକ ହୁଏଇ ଏହା, ୧୦୯ କବିତା ୩୦୯-ରୁ ଲୋକ ଜ୍ଞାନବାଦୀ
ହୁଏଇ ଏହା କବିତାଟି ଲିଖିଲୁହା, ୧୦୯ କବିତା ୧୦୯ କବିତାଟିଲିଖିଲୁହା,
ଲୁହା, ୧୦୯ କବିତାଟିଲିଖିଲୁହା ତିବି ‘ବଳକାରୀ ୧୦୯ କବିତାଟିଲିଖିଲୁହା
୧୨ କି ଲୋକ ହୁଏଇ ଏହା, ୧୦୯ କବିତାଟି ୧୨ କବିତା କିମ୍ବି ମାତ୍ରିନିକ୍ରମ
୧୨ କି ଲୋକ ହୁଏଇ ଏହା, ୧୦୯ କବିତାଟି ୧୨ କବିତା କିମ୍ବି ମାତ୍ରିନିକ୍ରମ
ନିଯନ୍ତ୍ରଣ, ୧୩ ରୁ କବିତାଟି ୨୦ କି ଲୋକ ହୁଏଇ ଏହା ମାତ୍ରିନିକ୍ରମ
ମାତ୍ରିନିକ୍ରମ ୧୪ ରୁ କବିତାଟି ଲିଖିଲୁହା, ୧୫ ରୁ ୩ ୧୫ ରୁ କବିତା ଦୁଇ ପାଇଁ
ଲୋକ ଶ୍ରୀ ନିକଟାରେ ହୁଏଇ ୨୦୯, ୧୮ ରୁ ୩ ୧୯ ରୁ ଶ୍ରୀ ନିକଟାରେ ଉନମିକ୍ରମ
ଲୋକ ଅଜାନାଲୁ ବୁଝା ୨୦୯,

■ এ কবিতাটি লেখা পড়ে কবি শামোজিন্দু এবং বলকানি পর্য দ্বারা
বস্তি ২০ এ কবিতাটি লিখেছেন, বলকানি ডেভড ও মার্যাদামকে গৃহত্ব দে
আমন্দ প্রকাম বাস্তব এবং অন্ধকার না, তবে এব্য তিনি ২১ এ কবিতায় দেখ
আমন্দটিকে জীব হিলেন,

■ আগো-ই এব্য বিষ্ণুদের নিম্ন পর্যাপ্ত নিয়ে কবি শ্রীমিতী
কলে বৈচল্য, উনিমি এব্য ২২ এ এবং কিম এব্য ২৩ এ, ২৪ এ, ২৫ এ
ও ২৬ এ কবিতাটি লিখেছেন, বাষ্পে এব্য ২৭ এ, চতুর্থ এব্য ২৮ এ, পাঁচিমে
মাঝে পঁচামে, দ্বাদশ এব্য ৩০ এ, পঁচামে এব্য ৩১ এ কবিতা, ৩২ এ ও ৩৩ এ
কবিতা বৈচল্য করেছেন, একে লেখা পড়ে কবি মনো মনো কর্ণলোকান্তার্যাপ
কবিতা বৈচল্য করেছেন, একে লেখা পড়ে কবি মনো মনো কর্ণলোকান্তার্যাপ
কিংবা আবৃত্তি অন্ধকার অভিহিতেন, পুনিমে এবং অপূর্বী কবিতা দেখাতে প্রয়োগ

■ ১০ টি খন্দক বলকানি দ্বারা শাস্তিনিকাতে এবং কবি শক্তেন্দু
শুভা (শ্রীমিতী) চলে গেলেন, তামাতে কবি শক্তেন্দু গাঁথে দুধা দেয়
করে, ২০ টি খন্দক তা আপনার মতলের কাছে পৌঁছাই দেনিরেন,

■ চার্বাহু ২০ টি খন্দক গাঁথে বলকান্দের আপনে ঘোর, কবি
মঙ্গ তার দেখা দুধ, ১৪ টি ড্রে কবি বলকানি ঘোর, এই এবং গৃহত্ব
কবি, 'বলকানি' কবিতা ভোগ ২০ টা, বলকানি ডেভড সফ ২১ টি ড্রে
শুগল (শ্রীমিতী) তিনি ৩৪ এ কবিতাটি জতেন, ইমেলি 'খন্দকী'
জীব, নিয়ে কবি পুরুষ দুধ, মঙ্গ মঙ্গ এবং বাল্লু ও নববধের
জীব, স্বীকৃত কবি কবি

୨୪ ଲେ ଆମ କବି କ୍ଷାପ୍ତ ଜିବିଦୁଃ, କହୁ ଯଥୁ ଶାରଜନମରୁହୁ ଅବୁ
କବି ଡଳଦୂ ମିଠି ଧୂଳେ ଶୁଣୁ, ଏହାର ଗାନାପଦ ବନାନାବ କବିତି
ଆବ ଲ୍ପା ଗଲିଲା, ଚାଲିଲିଯୁ କାହିଁ ଗାନା କିମ୍ବା ହୋଇଲା,

ବିଶ୍ୱ. ପୁଞ୍ଜୀର କବି ଅଭିନ୍ଦନ ଦଙ୍ଗେ କିମ୍ବା କାହିଁ ହେଲା
ଏବଂ ବୁଦ୍ଧି ପଥ ୧୩୧୨ ମାର୍ଚ୍ଚ ୧୯୫୨ କାବିତି, ‘ବନାନାବ ଅବୁ’ କବିତି
ଆମରେ ଲେଖା ୨୦। ୨୧ ରୁ ଉତ୍ତର ପଥ କବିତିର ଏହା, ବନାନାବ ଅବୁ
୨୨ ‘ବନାନା’ (୫୬), ଏବଂ କାବ୍ୟକାଳି ପଥ ଆମରେ ଲେଖା, ଆମରେ କିମ୍ବାଦେଖି
ମୁଖ ଘରାମିଥି ଦେଖି ଦିଲ୍ଲି ପକାଳ କଲକା ଦେଖି ଲେଖା, କାମାଳ ଓ ଅପରି
କବିତିର ଦେଖି ୨୦, ଏବଂ କବିତି ନାମେ ବହୁମୁଖ ନମ ୨୦ - ‘ବନାନା’। ୨୧୦
କବିତାଟି ଓ ୨୨ ରୁ କାବିତି ଅଧାରେ ଲେଖା।

**ବିଶ୍ୱ. କାହିଁ ହାତେ ଏହେ କବି କିମ୍ବାଦ୍ୱାରା ହେଲା, ଅଧାରେ ଏହା
ବନ୍ଦେ ୧୨-ରୁ ଜ୍ଞାନାନ୍ଦନ କବି ‘ବନାନାବ ଅବୁ’ ଓ ୧୩ ରୁ ଜ୍ଞାନାନ୍ଦନ
୨୧୦ କବିତି ହିଲାନ୍ତିର, ଏହିମା କବି କିମ୍ବାଦ୍ୱାରା ହେଲା – କାମାଳମୁଖ ଆମରେ
କିମ୍ବା ଶୈଖ ଉତ୍ତରରୁ ଏହା ମାତ୍ରିନିତିତ୍ଵ ଜିବିଦୁଃ, ୧୩-ରୁ ଅଭିନ୍ଦନ କିମ୍ବାଦ୍ୱାରା
ବନ୍ଦେ କବି ୧୦୧ ଓ ୮ ରୁ ମାଲ୍ଲିନୀ ୪୧ - ୪୨ ଏହି କବିତାଟି ଲେଖି, ଏବାକି
କବି ମାତ୍ରିନିତିତ୍ଵ କିମ୍ବା ୨୧ ରୁ ମାଲ୍ଲିନୀ ‘ବନାନାବ ପ୍ରତିକିର୍ଣ୍ଣିତ ଓ ସୌଭାଗ୍ୟ
କୁ ୪୪ ଏହି କବିତି ଲିଖିଲା,**

**ବିଶ୍ୱ. ମାତ୍ରିନିତିତ୍ଵ ବନ୍ଦେରେ ତଥାପି ଜୀବନ ଏହା, କବିତି ୧୫
ଓ ୧୬ମାର୍ଚ୍ଚେ ମର୍ତ୍ତା ଲୋକାମ୍ବୁଦ୍ଧ ମାତ୍ରିନିତିତ୍ଵ ଚକ୍ରରୁ, ୧୭ ରୁ କୈବି
କିମ୍ବା କାମାଳମୁଖ କିମ୍ବା ‘ବନାନାବ ମୁଖ କବିତାଟି’ ୪୫୦୧ (ନ୍ରେଷ୍ଟର୍ ଅଧୀନ୍ୟ)
କବିତାଟି ଲିଖିଲା,**

ଆମ ମଧ୍ୟାଳ୍ପରେ କୁଣ୍ଡଳାରେ ବିଦ୍ୟା କବିତା 'ମୁହଁରେ ଅଭିନାଶ' ଏବଂ
୨୦୮, ଲିଟି-ଚାହା, 'ମୁହଁରେ ଅଭିନାଶ', ମୁହଁରେ, କୀର୍ତ୍ତ୍ୟ, 'ଆମ', 'ଚିତ୍ରିତ୍ତି-ଗ୍ରନ୍ଥ'
ତାହାର ଚିତ୍ରିତ୍ତିଲିଖିତ ଆମ-କୁଣ୍ଡଳାରେ ହୈବ ଛକ୍ର କୋରାର ଜାଗ ଆମର ବୁଝି
କୁଣ୍ଡଳାରିଣ୍ଗ ଏବଂ ଆମ ଅଭିନାଶି ହୁଏ ହୁଏ କୁଣ୍ଡଳ କୁଣ୍ଡଳ ଏବଂ ଆମ ବାନାରାତ୍ରିରୁ
କୁଣ୍ଡଳିଙ୍ଗ ଏବଂ ଆମ ଅଭିନାଶି ହୁଏବା ବଳ ପାଇବ ମୁହଁ ରହି ହେଉ ଏହାରେ

ଫର୍ମ ଏହେ ହୁଏ ହୁଏ ୨୦୮ - "ବଳାକ୍ଷେତ୍ର ମୁହଁ", ଅଭିନାଶ ମହି ଶାନ୍ତି ଜାମଣି
ନାତିକେ ବଢ଼ିଯାନ, ଏହେ ଭାବାନ ଗତିପରାଣେ ମହି ଅଭିନାଶରେ ଜାମ ଗତ
ପାଇଛି, ଏହେ ଯିବି ଅଭିନାଶ ତିନି ଓ ଲୀଳାନ ଏହେ ହୁଏ ହୁଏ ଚଲାଏ, ପରିବହ
ଓ ଆନିଧି ପାଇଥିବା ହୁଏ - କୁଣ୍ଡଳ ମୁହଁରାଳ, ଏହେ ବନିବିନେ ବନି ଦିଲେ ଏହି ଓ
ପଞ୍ଜିଯାନ୍ତି ମୁହଁ ବାହାର, ପରିବହିତ ଓ ହୁଏହୁଏ ବଳ ବଳାକ୍ଷେତ୍ର ହୁଏ - କୀର୍ତ୍ତ୍ୟରେ ଅଭିନାଶ
ପହିଲୁ, "ବଳାକ୍ଷେତ୍ର ବଳି ଏହେ ହୁଏ ହୁଏ ଅଭିନାଶି ପାଇବାର ଦେଖେହୁଏ" କୁଣ୍ଡଳ
କାବିତାକୁଣ୍ଡଳି ମହି ମୁହଁରୁଟି ଏହେ ବଳମେଳି କାବିତା କହି ପାଇବାରୁ -

(ବୋ) ନିଯମିତ ବିଶ୍ଵର ମହି ଅଭିନାଶି ଅଭିନାଶି ଲମ୍ବ ବଳା ହୁଏ -
"ଦୁରି", "ଶାତାରାତିରାତି", "ଚନ୍ଦ୍ରନା", "ବୁଲା", "କାନ୍ଦା", ଅହୁଏ ବଳିକୁଣ୍ଡଳି ମହି,
(ଦ୍ୟ) ମାନବବ୍ୟବରେ ମହି ଅଭିନାଶି, ଗତି ଅଭିନାଶି, ଏବଂ ନାତିମହାତାତିରାତିର ଓ ଦୋଷରେ
ଅଭିନାଶ କରାଇଛି, "କୁଣ୍ଡଳରେ ଅଭିନାଶ (୨୦୮)", "ଶାତାରି", "ଶାତାରି", "ଶାତାରି",
ଅଭିନାଶ ଅଭିନାଶି କାବିତା!

(ଗ) ଅଭିନାଶ କିମା ବଳିକୁଣ୍ଡଳରେ ଅଭିନାଶି କଥା କହାଇ ପାଇବି, "କୁଣ୍ଡଳ ଦେଖିଲୁ"
"ତୁମି- ଆମି" (୨୦୮), "ଶାତାରି" ଅଭିନାଶି ମହି,

(ii) কবি অমৃতে অন্তর্ভুক্ত খণ্ডিত মন্ত্র দিয়ে নিয়ন্ত্রণ পরিষিঠলের পাসে এবং
চলে। বিশ্বে জগতান্ত্রিক হিসেবে, অতি শুভভূত আশ বিশেষ অন্তর্ভুক্ত।
অতএক রম্ভে অবস্থা গতি ব্যাপুর, এতিই উন - মন্ত্রকাৰ, অন্তর্ভুক্ত অধিক অসম
দুর্ঘে চলে। বিশ্বে অধিক বিশ্বাল অজি কোৱা, দুর্ম- শুভ্য, অধিক- বুঝ, দুর্ম-
ক্ষমাবৃত্ত, রাণ- জপাশুভ্য অধিক দিয়ে এই নথিগুলি অধিকার কৈ দুর্ঘ সহজ।
এটি অধিক অন্তর্ভুক্তি মন্ত্রান্তর্ভুক্ত কৃষ্ণ, এবং ৩২ কবি প্রক্ষিপ্ত অন্তর্ভুক্ত ও
অসম অন্তর্ভুক্তি মন্ত্রান্তর্ভুক্ত কৃষ্ণ, এবং ৩২ কবি প্রক্ষিপ্ত অন্তর্ভুক্ত ও
অসম অন্তর্ভুক্তি মন্ত্রান্তর্ভুক্ত কৃষ্ণ কৈবল্য কৈবল্যে। ইবি 'আশালয় 'চুঙ্গা'
বলাবতা অসমি কৈতোৱি অৰ্পণ।

মুক্ত কোনো প্রকাৰ আকীম্বৰাচিল নিয়ে আৰু অকীম্বৰ পুৰি আৰু কৈম্বৰ
ডে আৰো পিতা ও আৰোহণ অধি দুল নিয়েছিলু ওহে শুভ রাত্ৰে।
ডে আৰো পিতা ও আৰোহণ অধি দুল নিয়েছিলু ওহে শুভ রাত্ৰে।
'কুবি' কৈতোৱি, কুবি পঞ্জী' আৰু পুৰি অৱলা কুবি, মিত্র কৈতোৱলু কুবি
ই দিলুন একন্তু কুবি কৈতোৱলু, অৱলৈ পতে দৈত্যে, নিয়েছিলু সকি
ভাল হোতে দৈত্য, কুবি কুবি, পতে দুৰ্ম দুল নিয়েছিলু হোতে। কুবি
কুবি নিয়ে-ই কু মন্ত্র দিলুন, তাৰ মন্ত্রিয়ে অধি দিয়ে কুবি নিয়ে শুভ
কৈম্বৰ নিয়ে-ই কু মন্ত্র দিলুন, কুবি কুবি কুবি কুবি কুবি কুবি কুবি কুবি
কুবি।

মুক্ত প্রজাৰ ধীক্ষণা শুভ রাত্ৰেছিলু, কুবি, শুভে কুবি
সন্ধীয় প্ৰয়াণ কুবি, কুবি গুৰে ধীক্ষণা আৰুম্ব শুভ লাভান্তু।
অগ্ৰিমত তাৰা পাৰিবৰ্তন ও কুবি ও অধিক অধি দিয়ে আৰো কুবি
চলান্তু, কুবি পঞ্জী চিৰদিলু, মজা কৈ নিছন শুভে অলফোনে 'কুবি'
হয়ে বৃক্ষে লালন।

ଅଜମାର ଫୁଲ
 ଚଲନ୍ତି ହୁଏ ହୁଏ
 କେବଳ ପଢ଼ି ଆଖି
 ତୁମି ପଥ ହୁଏ ଜଣ
 ଦେଖନ୍ତେ ଦୌଡ଼ାଇ
 କୋଣେ ଆଖି ଆଖି
 ଏହି ଛା, ଏହି ଦୁଇ, — ଓହ ଜାହା, ଓହ ଜାମି ଦୁଇ
 କାହାର ଜାମାଲି
 ତୁମି ଦୂରି, ତୁମି ଦୂରି ଦୂରି,

ଏ ଏହି ପାଞ୍ଚ ପଢ଼ି କବିତା କୁଟିଲା ମୋହିନୀ । ୧୯୫୫
 କବି ବଲହିଲା — କୋଣର ଶୁଣିବି ମହି ଦୁଇକି-କେ ଆଖା, ଗାନ୍ଧିମିଳାର
 ମହି ତାହି ଦିଲ୍ଲିଯୁ, କିନ୍ତୁ ଏହା କବି ବଲହିଲା — ତୋବେ ଦୁଇକା ଦୁଇ, ତୋବେ
 ପାଣୀ ଉପାର ମହିଲା ତା ଦିଲାନ୍ତର ଭାବ ଆଖା ହେଉ ଲେ । ତେ ମହି ଏ
 ସୃଷ୍ଟିର ଜାନନ୍ଦ ଭାବି ଫୁଲେ ଦେଖିଲି, କୁଟେ ଆମଦ କା ଦିଲା, ଏହି ଏହି
 କୁତୁ ଡକିଲେ ଦିଲାନ୍ତର ବିତ୍ତ ରିକ୍ଷି ମହି କିମ୍ବକେ ଅନନ୍ତ ରହିଲେ । କବି
 ଜୀବି କବିତା ଦୁଇ କିମ୍ବକେ ମହିନେ ନିମ୍ନଲିଖିଲା, ଏ ଦୁଇ ତା ରାତରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ
 ଜୀବ ଜୀବ ରୁହି ତା ଆହେ ଦୁଇ ନିମ୍ନଲିଖିଲା, ଏ ଦୁଇ ତା ରାତରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ
 ମୋହିନୀ କାହାର ଦୁଇ, ଏହି ଜୋକୁଙ୍କ ଓ କବିତା କାହାର ଜୀବନ ଯୋଗିଲେ
 କବି କବି ମହୁଜାର, ମୋହିନୀ ଜୋକୁଙ୍କ ଓ କବିତା କାହାର ଜୀବନ ଯୋଗିଲେ
 କୁତୁର୍ବାଙ୍ମ କବି ପାଣୀ ଆଖା ଦୁଇ ନା ଗୁଡ଼, ତିନି କୁତୁର୍ବାଙ୍ମ କାହାର କାହାର

କୀ କାହାର କାହାର କାହାର ?

ତୁମି ଦୂରି ?

ନା, ନା, ନା ତୁମି ଦୂରି !

କେ ବଳ ରହୋଇ ଜୀବ ଦ୍ୱାରା ବକାଲ
ନିଶ୍ଚିକ୍ଷା କୁଳ ?

ତୋମାରୁ କି ନିଶ୍ଚିକ୍ଷା ହୁଲ ?
ତୁମି ଏ ନିଶ୍ଚିକ୍ଷା କମା କୀମା ମାତ୍ର
ତାହେ ହୁଲ ।

ହୁଲ ଧାରା ଲୟ ତା ଦେ ଜାଲା;
କିମ୍ବା କିମ୍ବା ମହା' ସବୁ ରହେ ଥାଏ ଦିଲ୍ଲୀ ଦେ ଜାଲା,
କମା କମ୍ବା ତୁମି ଲୟ,
ନମାର ମାରାର ନିଶ୍ଚିକ୍ଷା ଦେ ପୈଲ ।

ଆତି ଆତି
—~~କୁଳ କୁଳ~~ ତୁମି, ଏହିଲା !
ଆମାର ନିଶ୍ଚିକ୍ଷା ।

ତୋମାରେ ଅଧ୍ୟେତ୍ର ଜାବ ଅନ୍ତରେ ମିଳ,
ତାହିଁ ଆହି, କିନ୍ତୁ ନାହିଁ ଆହି
ତବ କୁଳ ବହୁ ଥାଏ ଗାଲ;
କବି ଅନ୍ତରେ ତୁମି କବି,
ରତ୍ନ ଦୂରି, ରତ୍ନ ଦୂରି, ରତ୍ନ ଦୂରି ଦୂରି ।

“বলাকা” কানুনের সাথে মধ্যক বরিতা ১০ - “শা-গুণ”;

কবিতাটি অসম ১৭৭১ খ্রিস্টাব্দে সমুজ্জ্বল সংস্কৃত পরিষদে গুণ শব্দের অর্থ কবিতায় কবি বলাকা শব্দে মুক্তি পাওয়া পরিকল্পনা করে এবং কবি আশান্তে ঢেম জানায় পরিষিদ্ধ দিয়েছেন, আবার এটি মতভেদে স্মৃতি দেওয়া জাতীয়ের নিচিত উচ্চালোচন বিশ্বে অন্যতম আশুপ্রাৰ্থ। মতভেদে অতি উচ্চ ঢেমকে সুবিনোদ বলে বলাকা হ্যু জাতীয়ের অন্যতম আশুপ্রাৰ্থ, আবার স্মৃতি আছে কিম্ববাবীয় মতে মুক্ত বল্বে,

এ কবিতায় প্রথমে কবি বলাকা প্রকাশনা কে শীর্ষস্থানে রেখেছেন এবং প্রথমে কবিতায় কবি বলাকা প্রকাশনা কে শীর্ষস্থানে রেখেছেন। কবি রেখেছেন মহামালৰ অধীন জীবন কে শীর্ষস্থানে রেখেছেন। এই মহামালৰ জীবন ক্ষেত্ৰে কিন্তু একটি পুনৰুৎপন্ন কৃষি প্রকল্প আছে। এই পুনৰুৎপন্ন কৃষি প্রকল্প কে বলাকা কবি বলে বলেন।

“এ বলা কুনিল হুৰি, যেতে কৈশৰ শা-গুণ
কালাগুৱাত ক্ষেত্ৰে হ্যু দীক্ষা দিমান।”

এ “মাতৃগান” কবিতায় অমৃতে এক মণ্ডে ছাল কিনেছেন,
যা বিশ্বনা চূলায় পতে একটু কিন্তু ক্ষেত্ৰে ক্ষেত্ৰে পতে একটু এই,
অমৃতে ক্ষেত্ৰে এ, কিন্তু পুরো দুধ আৰু ক্ষেত্ৰে বিশ্বনা কুৰ
দুধীয়া প্রত্যো চলিয়ে হ্যু, স্বীকৃত জাপানীয়া ও উচ্চ বালাগুৱাত দেওয়া
জান বলে তাৰ অস্তুগুৱাত বিশ্বনাৰ কৃষি গান্ধীল নিয়ান কৰেন্দিলৈ

ଓ କୁହା ନିଜାତା ଅବୀଜାତା ଏବାର୍ଥି ପ୍ରମାଣ କରି ଦେଖାଯାଏ ମହିନେ
ଏହି ଅଧିକାରୀଙ୍କ ମଧ୍ୟ ଆଜ ଆମ, ଏହି ଦିନ ତଥା ରୋତ୍ରା, କିନ୍ତୁ କୃଷ୍ଣ କାଳେ
ଜୀବିତର ଏବାର୍ଥିର ସିଂହ ଥିଲା, ଉତ୍ସବ ଅନିକ କୁହା ଏ ଅନ୍ୟିକର ବନ୍ଦର ପାଶେ
ଅଧାରେ ବ୍ୟାକ୍ଟର ଗ୍ରାହି, କିନ୍ତୁ ଜୀବିତର ଅନ୍ତରେ କୃଷ୍ଣ ମଧ୍ୟ ଆମା ହୀ
ଦିଲା,

ଫଳ ମାନୁଷ ଭାବରେ ଚିହ୍ନର ପରି ବ୍ୟାକ୍ଟ ଅଧିକା, ଏମାତ୍ରକେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ
ବ୍ୟାକ୍ଟ ବେଳୋତେ କିନ୍ତୁ ଭାବାରୁ କୌଣସି ଦେଇ, ଏମ - ବ୍ୟାକ୍ଟରେ ଏହି ଚିହ୍ନ
ରୋତ୍ରା ମଧ୍ୟରେ ଅନ୍ତରେ ଥିଲା, ଏହା ବୀରବ୍ୟାକ୍ଟ କିମ, ମାମ, ମାମ, ଏହେ ଏହେ ବୀରବ୍ୟା
ପଦ ଭାବେ, ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ ଭାବେ ପଦ୍ମ ହାତ ଆମା ପଦକୀ ବୀରବ୍ୟା
ଅନ୍ତରେ ବନ୍ଦର ଥିଲା, ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ମଧ୍ୟ କିନ୍ତୁ, କିନ୍ତୁ ପଦ ଭାବେ, ମାନୁଷ କୁହା ଅନ୍ୟା
ପରି କିମେ ମନ୍ଦିରେ ଚାହିଁ କିନ୍ତୁ କିନ୍ତୁ ଭାବାରୁ ଜୀବିତ ମାନୁଷ ପାଇଁ ହା, ତେବେ
ବାବି ବନ୍ଦର :

“ହୀମ ଓହ ମାନ୍ଦ୍ରାମ୍ୟ

ବୀରବ୍ୟା

କାହା ପାଦ କିନ୍ତୁ ବାହିନୀ

ତାରି ଦ୍ୟ ମଧ୍ୟ

ନାହିଁ ନାହିଁ ।”

ଆମ୍ୟ, କାମାଜାତର ବୀରବ୍ୟା ଆମା କିମ୍, ‘ବୀରବ୍ୟା କାହୁରେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ
କାବିତିମାତ୍ର ଦ୍ୟ କାହୁରେ କ୍ଷିଣି ଥିଲୁ ।

ଫଳ ଚାକ୍ରରେ ଏହା ମଧ୍ୟରେ ଜୀବିତରେ ଏହା କାମନ୍ତି, ଏହା
ବିକିନୀର ଅନ୍ତରୁ ରୂପତି, ଜାନିବାରେ ବୀରବ୍ୟା ଏହା ଦିଲା କେମ୍, କାମାଜାତରେ

କଥା ଅନ୍ଧରୁଙ୍କ ଦୂର ଉପ - ଡକ୍ଟରଙ୍କରୁ ଜୀବନ୍ତ, କେବୁ କହି ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବା
ମହାଶିଖାର କାଳେ ଲୋକ ଚିକିତ୍ସା କ୍ଷେତ୍ର ଜାଗରଣରୁ ଜୁମା କୌଣସି ଓ ଦୂର
ମହାର ଶା-ବ୍ୟାକରୁ କାହିଁ କାହିଁ ନୀମି କାହିଁ କାହିଁ ପଢ଼ିବା,

‘କୁନି ଲାଇ, କୁନି ଲାଇ, କୁନି ଲାଇ କିମା’,

୧

ଓ ଧୂରି ବାଲୁରୁ ଅନୁଭାବି କାହିଁ ଲିଖୁ, କିମ୍ବା ପାତ୍ର ଥାଏ । ଯାଏ
ବିଭିନ୍ନ କାହିଁ ମାନୁଷ ଏହିରେ ଚଲ, କ୍ଷେତ୍ର - ଡକ୍ଟରଙ୍କରୁ - କ୍ଷେତ୍ର
ମହା - ମହା - ମାନୁଷ କିମ୍ବା - କିମ୍ବା କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ ମାନୁଷଙ୍କରୁ ଅବସ୍ଥା କ୍ଷେତ୍ର ପାଇଁ ପାଇଁ କାହିଁରେ
କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ
କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ କାହିଁରେ

୧୦ - କ୍ଷେତ୍ରର କୀତିର କ୍ଷେତ୍ର, କୁନି କୁନି କୁନି

କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ

ପଞ୍ଚାକୁ ଦେଲିନ୍ଦା କାହିଁ, କାହିଁକି କାହିଁ

-କାହିଁକାହିଁ ।’

— କଣ୍ଠି-କେ ଲୀଳା, ତାଙ୍କ ପାଦ ଅନ୍ଧରୁ ଥିଲାକୁଣ୍ଡ, ଏହି ଅଭିଭାବରୁ

— କାହାରେ ଆମା କାଳ୍ପନି ମିଳି କାହିଁବା ଗୁଡ଼େ ଖେଳୁ, ବାନାମା, ଅନ୍ଧରୁ
— ଜାଲୋଟି ଖାଲୁ କାହିଁବା ନାହିଁ ଅବଶ୍ୟକ ଚାହୁଁଥାବା ଏହା ପ୍ରକାଶିତ ହୈ,
ବାନାମା କାହିଁବା କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ — କୁଳାଳରୁ ଦିନ, ମଜି ଦୂର
କାହାକୁଣ୍ଡ, ଉଗ୍ର ଓ ଦୀପରୁ ଅଭିଭାବରୁ ବିଦ୍ୟାନ ରାହରୁ।

ଫିଲ୍ କବିତି ଅନ୍ଧରୁ ଯଦି ବରତ୍ରୀ, ଯିନିଟି ରମୀ ଅବିଲମ୍ବିତ ଜାହାନ୍ତି

— ଶୀଘ୍ରା! ବର୍ଷା ଚଲିବୁ, ଏହି ଜ୍ଵାଳାରେ ଦୂର ଆମାର ଦୁଇଲ୍ ଜାହାନ୍ତି
ନା, କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କ ଦେଇ ଦୂରଟି କୁ ଦେଖା ଥାଏ ତାହିଁ କିନ୍ତୁ ଆମାର କୁଳାଳରୁ
ଜମି ଉଠି, ଉଠି କୁ
ଓ କିନ୍ତୁ- ଅନ୍ଧରୁ ଯୁଦ୍ଧି, ଯନ୍ତ୍ର ଅମାର ବିଦ୍ୟାର ଶୁଦ୍ଧି, କବି ଲାଦିର ମଜି
ବିଦ୍ୟାପ୍ରବାନ୍ତରେ ଦୂରା ବାହୁଦୂର ଅଭିଭାବରେ ଦେଖାଯାଏ ଏହା।

ଫିଲ୍ ଅରପର କବି ତମିଲ ଲୋକଙ୍କ କଥାର ବରତ୍ରୀ, କଥାର
ଛେତରୀ, କଥାର ଦୈବତିରୀ ଅନ୍ଧରୀ ଦୂର ନିଃମନ୍ଦିର ଏବଂ ଲାଦ ଜର
ପଞ୍ଚମା, କବି କିନ୍ତୁ ଅଭିଭାବରେ ବଜାନା ବରତ୍ରୀ ପ୍ରିୟଜମ୍ବୁ ଦିଲ୍ ଏନିମିଳ
କୁଳାଳ ଅଭିଭିବିନ୍ଦି ନାହିଁ ତି କଲେ, ପ୍ରିୟଜମ୍ବୁ ଅନ୍ଧା କିନ୍ତୁ ଏହି
ନାହିଁ ଅନ୍ଧରୀ ଦୂର ଶୀଘ୍ରା, କବିରତ୍ରୀ।

“ଦୂର କୁ ଅଭିଭାବ

ବନ୍ଧୁ ସାହେ

ଦୂର ଶୀଘ୍ରା କାଳା — ଦୂର ଅଭିଭାବ

ନାହାନ୍ତର ମନ୍ଦି”।

ଏ ପରିମା କବି ବନ୍ଦରେ ଲେଖ କିମ୍ବା କବିତା ଗମିଯିବେ
କୋ, ପାରିଷ୍ଠ୍ୟ ହୋଇ ନାହିଁ, ଅନୁକାଳେ କହିଲୁ ଆହଁ ପଢ଼ିବୁ ଶୁଣିଲୁ କିମ୍ବା
ଆମ ପାଥରେ ତା, ପର୍ଯ୍ୟ କୋଣରେ କିମ୍ବା ଆମରେ ଛାନ୍ତି - କହି ବନ୍ଦରେ କହିଲୁ
ଅନିତା ଚଲା, ଅତିପ୍ରକାଳେ କହିଲୁ ନାହିଁ ମହିଳା କିମ୍ବା ଅବଶ୍ୟକାମରୀ
ମଧ୍ୟ ଆମରୀଳା ମାଟିଲୁ ହୁଏ, କିମ୍ବାରେ ଅବଶ୍ୟକାମ ଏହିରେ ମାନ୍ଦି, ଓ ଆମରୀଳା
ହୁଏ, କହିଲୁ ତା କହା କହା ହୁଏ ତା, ଏହି କିମ୍ବାରେ ମଧ୍ୟ ମହିଳାରେ କହିଲୁ ଏହି
କିମ୍ବା, କୀର୍ତ୍ତିବି ଓ ଅମାନ, ଏହି କୀର୍ତ୍ତି ହୋଇ କିମ୍ବାରେ ଶୁଣାଯିଲୁ
ହୁଏ ଏହି, ମୁହଁରୁ ହୋଇ କୀର୍ତ୍ତି ଓ ଅମାନରୁ କହାଯାଏ ମନ୍ଦି ତା ପ୍ରାତିହରି
କିମ୍ବାରେ ମହିଳାରେ ହୋଇ, କବି ବନ୍ଦରେ -

“ଦେ ମୁହଁ ମନ୍ଦି ହୁଏ କୁଦାଳ କିମ୍ବା ହେ ତାଙ୍କ,
ତାଙ୍କ କୁଦାଳ
ପରିବି ମନ୍ଦି”,

ଏ କବିତା କିମ୍ବା ଏହି କିମ୍ବାରେ ମଜ୍ଜି କବିତାକୁହାନୀ
ଚକ୍ରଭାବ କାହା ମୁହଁ ହେଲୁ, ଆ କବି ମଜ୍ଜିର ନାହିଁ ଅନୁକେ କହିଲୁ
ମାନ୍ଦି, ବିଶ୍ଵାସ କବିତା ଏ ମନ୍ଦି ମହିଳି ହେଲୁ, ଓ ମନ୍ଦିରେ କଥି ମଧ୍ୟ
କୋଳାଳା ମେହନେ କୋଳ ମାନ୍ଦିରେ ଦିଜେ ଚଲିବୁ, ଦେ ହେ ଦୂରେ, ପର୍ଯ୍ୟ ହେ ପାରେ
କବିତା ମେହନେ କବି ବନ୍ଦରେ -

“ମୁହଁ ବାବୀ
କିମ୍ବା ହେ ତୋମି
ମହାମୋହି
ମାନ୍ଦିରେ କମ୍ବାରେ ହେ
ଅଜା ଅତାହେ”।

॥ "बलाका" वर्षायुद्धे ७६०८ वर्षात् २० - "कलाका", जहि लांचिही

- "बलाका" वर्षायुद्धे भूमार्गात् २० - अविद्या "कलाका" वर्षायुद्धे वर्षात्

उपर्यामन ११५ वर्षायाह अविद्या भजो उल्ल चित्तिल्लु, मिथ्यायुद्धे अविद्यायु

- विद्युम् रात्रिल्लु, वर्षितिल्लु उल्ल अविद्या विद्या व्युत्पत्ते आउ, रात्रु गु

मध्यायुद्धे वर्षायुद्धे अविद्यायुद्धे विद्या नदीः असु रात्रेयुद्धे अविद्या अविद्या

वर्षायुद्धे, वर्षितिल्लु उल्ल लित्क अल्ल अविद्या आउ, असु असु

वर्षायुद्धे अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या

विद्युम् रात्रु उल्ल उल्ल अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या

असु असु

वर्षायुद्धे अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या

वर्षायुद्धे अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या अविद्या

कवि लिखितः—

"मले २० - ए पायाडि वारी

आवि दिल्ल

असु वाराह उल्ल

सुविवित चित्तिल्लु अविद्ये अविद्ये

उल्ल आउन्"

॥ कविले भले इल्ल उडे उडिग्मास बालाकाली राम अविद्याय

असु निष्ठा वाराहये भद्र्य उल्ल आउन गुरु दिल्लु, उडे उडे

राम अल्ल उल्ल भजो उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल

उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल

उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल

उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल

उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल उल्ल

"वालिं शुभ्राल वारी निधिल्ल आहु

देवा नम्, रामा नम्, अल्ल गाल"

☒ ୧୯୯୯ବାସନା ରୁଦ୍ରପିଲ୍ ହିମେଜ କବିତା ଅନ୍ତରେ ଭାଙ୍ଗା, କବିତାରେ ଅନ୍ତରେ କହିଛି, ଏହି ଭାଙ୍ଗି କଲାକାର ପାଥର ମହିଳେ ଟେଲାତା, ଚକ୍ରପାତା, ମାହି ମିଶ୍ର ପୂଜିତୁ ଥାଣ ଫୁଲ ବୀର୍ବିନ୍ ଓ ବଳାକାର ମହିଳେ ଅନ୍ତରେ, ତାର ଦେଶରେ ଅନ୍ତରେ କାହାରେ, ଦିନ ରାତ୍ ଦିଲାପତ୍ରେ, କବି ଆମର ଅନ୍ତରେ ଏହି ବିଦ୍ୟାରେ ଜାଗିଷ୍ଠାତା ଓ ଅନ୍ତରେ କହିଛି ଯନ୍ତ୍ରିତା —

“କୁଳିନୀ ଆନନ୍ଦେ ରାତ ରାତି ହଳ ହଳେ
ଅନନ୍ତି ଲାହ ହେଲ ହଳ”

ଆମରେ ଅନ୍ତରେ ଏହି ‘ଅନ୍ତରେ ଅନ୍ତରେ ଅନ୍ତରେ’,

☒ ଆଲାପ୍ ବଳାକାର, କବିତ୍ୟ କବି ବଳାକାର ମହିଳେ ହିମ୍ବ, ମହୁ
ହିମ୍ବ ମହୁ ଅନୁଷ୍ଠାନି ଅନୁଷ୍ଠାନି କହିଛି, ମହୁ ଫୁଲ ଫୁଲ ହଳ
ହଳେ ମହୁ ଅନୁଷ୍ଠାନି ଅନୁଷ୍ଠାନି କହିଛି, ଏହି ମହାଲ ଚାହୁଏନା, ମହୁ
ହଳେ, ବିଶ୍ଵର କୁଳାଚିତ୍ର-କୁ ଅନ୍ତରେ ଏହି କାହାରେ, ଏହି ମହାଲ ଚାହୁଏନା, ମହୁ
ହଳେ ଅନୁଷ୍ଠାନି, ଏହି ଅନୁଷ୍ଠାନି ଏହି ନିମ୍ନ ପବିତ୍ରିତ ହଳେ, ହଳେ, ଏହି
ହଳେ ଅନୁଷ୍ଠାନି, ଏହି ଅନୁଷ୍ଠାନି ଏହି ନିମ୍ନ ପବିତ୍ରିତ ହଳେ ହଳେ, ଏହି
ପବିତ୍ରିତ ହଳେ ଅନ୍ତରେ ବଳାକାର କାହାରେ ହିମ୍ବ ହଳେ ହଳେ,

☒ ବଳାକାର ବଳାକାର ଏହି କବିତା କବିତାରେ କବିତାରେ ହିମ୍ବ
ଅନୁଷ୍ଠାନିରୁ, “ବଳାକାର କାହାରେ ଏହି ଉନ୍ନ-ପ୍ରତିକାଳ ବଳାକାର କାହାରେ
ଜାଗିଷ୍ଠାତାରେ ଭାବ ମୂଳ ଦୈନିକୀର୍ତ୍ତି, ଏ କାହାରେ ଏହି ଅନ୍ତରେ ବଳାକାର ହଳେ ହଳେ
ଦେଶରେ ବିପନ୍ନ କବିତା,

ଶୁଣି କମ୍ପରିଯାପୁ ଡେଲିପରୋପ୍ କାନ୍ତୁ ହୁଏ - ୧୯୩୩ ।

ଏହି ବାଣୁପଢ଼ୁ ଗୋ କାହିଁର ଖଣ୍ଡା ହୁଏ ୧୯୩୧ ୧୯୩୨ ବଜାଦେବୁ ଲୋ
ଗାଁ ତଥା ୧୯୩୩ ବଜାଦେବୁ କୈମାର ମାତ୍ର କୌଣସିଆ ପାଇଁ ବିଭିନ୍ନ
ଶାଳ ଏବଂ କାନ୍ତିଲିଙ୍କ, ଭେଦଭିନ୍ନ କାହିଁରୁଳି ବଜା କରେ, କଳାଳା
ବାଣୁପଢ଼ୁର ଅର୍ଥ କାହିଁ ହୁଏ - “ମୁହଁରୁ ଅଭିମନ” ।

ବିଭିନ୍ନ ଦୃଷ୍ଟି ଅନୁଭବ ଅଛି, ତାହା ଲୋକୁ ହୀମ

ଏହି ଲୋକଙ୍କ ବିମ୍ବରୁ - ମଧ୍ୟ ବରି- କିମ୍ବ, ଅଭିକ୍ଷମଳାଓ କୁଣ୍ଡଳ
ରେ କୌଣସି ହୁଏ କାହାରୁ ହିତ ଅଗିଲେ ଛା, ଏହି ଶୀତଳ ହୋଇ
ଶୁଣି ବିଭିନ୍ନ ବାଲ ନା, କବି ଏହି ପଦ୍ମ ନୈବଦ୍ଧରୁ ମାତ୍ର ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ଜୁମିଲୁ
ମାତ୍ର ଆଚିର ମଧ୍ୟାରେ ଅଭିଲାଷିତ ଆଶା ଆଶ୍ରମିତା, ଶୀତଳ ତାହେ ଆ
ହେ, ଅର୍ଥାତ୍ କୌଣସି ହୋ ବାଣୁ କାହାରୁ ହୁଏ କବି ବଢ଼ିଲୁ -

“ଉଦେ ଶୀତଳ, ଉଦେ ଆମ୍ବା ବୌଜ
ଉଦେ ଭୁବନ ଉଦେ ଭୁବନ

ଜାହି ଭକ୍ତରୁ ଯା ତାହେ କୌଣସି ବୌଜ”

ଏହି କାହିଁରୁ କାହିଁ ହେ କୌଣସି ଲୋକଙ୍କରୁ କୌଣସି

“ବୀରଙ୍କ କୌଣସି, ଅସୁର, ଦୀପତ୍ର, ଅମନ୍ତର, ଅର୍ପ, ଅମ୍ବା, ଅଶ୍ଵ ପରିତି
ବିଭାଗ ହୋଇ କାହାରୁ, କବି ମନେ କାହାରୁ ଆଚିର ପରିଷା ମଧ୍ୟାରେ
ବାଲ ଆଶା, ତାଦେବୁ ପ୍ରାଣରିତି ପରାତ୍ମା ଅଜ୍ଞା, ତଥା ତଥାରେ ଯାହା ନିଜଦେବ
ପାଶ, ଅଭିଜ୍ଞ ବଳ ଦାବି କାହାରୁ, କବି ବଢ଼ିଲୁ ଏହା କୌଣସି କୁଣ୍ଡଳରୁ
ଆମନ୍ତର ତଥେ ପ୍ରିପଟେ ଔଳ ଦୂରି ମର୍ଜା ଅଞ୍ଚଳରେ ବାବୁ ଶୀର୍ଘ୍ସ ବୁଝେ,
କିମ୍ବରୁ,

ପଦେ କୀମୁଣ୍ଡ ଜାଗ୍ରା ତତ୍ତ୍ଵ ଉପାଦୟ ଏହି କରି ନୀଳଦୂଃ ଜାତ୍ୟାର ଅନିଷ୍ଟତା,

“ବେଳେ କାଳେ ଦୁଇଟି ଗୋଟିଏ ଚାଲା,
ବିଶେଷ କ୍ଷେତ୍ର ଦ୍ଵିତୀୟ ବୈଶଳୀ,
ଉଦ୍‌ବ୍ରାତେ କଥା କହା ଧୌତ,
ଅଥ୍ ବୀଜ୍ୟ ଅମ୍ବାରେ ଆମ୍ବା ଖୋଟା”

କବିହି ବିଶ୍ୱାସ, କାଜି ମତେ ଅବେଳାଦିନମୁଁ ଯୋଗମତି ପରି ପରିବର୍ତ୍ତନ
ଆଗେ, ଅଛନ ଅଟିନ ପଞ୍ଚିଦୂଃ ଯଏହୁ ଦୁଇଶୁଳା ହେଉ ଯାଏ ।

ବିବିଧ କବିତାରେ କରି ନୀଳଦୂଃ ଆହେ ଉପରେ କାହାର ଆନିଷ୍ଟ
ଏବା ତୁଳା - ତୁଳାପ୍ରିଣ୍ଡ ମହି ଚିତ୍ରେ କରିବାରେ ଏହି ମରକ୍ଷ
ଆମିନ ଅଚିକରାବତ୍ତା କାହା ଅନ୍ତରୁ ହେଉ ଚକାରା କହେ ଦେବେ, ଏହା
ମରକ୍ଷରେ ଯାଇବାକିନ୍ତି ମିଠାର କହେ ତୁଳା ଶ୍ରୀ ପରମାନନ୍ଦ ଦେବ ପାତି ଦୟା ।
ମହି ଚିତ୍ରେ କିମ୍ବିତ ଓହ ତରୀକ୍ଷା କଥାକୁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କରେ ନା, ବରି - ବିପତ୍ତିର
ମହି ଚିତ୍ରେ ତରୀକ୍ଷା ମୂରିକି ଦେଇବାରୁ ହେଉ ଚାଲା ।

ବିବିଧ କବିତାରେ ମୁହଁର କାହି କୀମୁଣ୍ଡ ଚିତ୍ରିତା, କିମ୍ବା
ବଳ ମହୁରିର କାହାକୁ, କିମ୍ବା ନୀଳଦୂଃ ମହି କରିବା ଚିତ୍ରିତକ
ଥା ଅନ୍ତରୁ କୀରତିର ମୁହଁ କାହା ଅନୁକ୍ରମ ପ୍ରାମାଣି ହାତିବିଲା କାହା ।
“ଚିତ୍ରିତା ହୁଏ କାହି ଚିତ୍ରିତି
ଅନ୍ତରୁ କାହିବି, ଦିଲି
ଆମ ଅନ୍ତରୁ ହାତିବି ଦେବ କିମ୍ବା” ।

କବିତାରେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବିଷୟରେ ଅଧିକ ଲାଭକୁ ପାଇଯାଇବା
କାହିଁ ମର୍ମରୀ ଦୋଷରେ ଅଧିକ ଦେଶ ସମ୍ଭାବିତ ହେବୁ, ଯାହା କାହିଁ
ମର୍ମରୀ ପରିଜୀବିତ ହେବାରେ ଏହା ହେବୁ କିମ୍ବା ହେବୁ, ଏହା କାହିଁ କାହିଁ
କ୍ଷିତିଭୀକ୍ଷିତିରେ ପରିବିଲୁ ଗତିଭୀକ୍ଷିତରେ ଅଧିକ ଦିଶାରେ, ଏହିଥିରେ କାହିଁ କାହିଁ
ଆମର କିମ୍ବା, ତୀରଦେଶରେ ମର୍ମରୀ ଏ କାହିଁ ଆମର କାହିଁ ଅଭିଭାବିତ ହେବୁ,

“ମର୍ମର ଯୋ” କାହିଁଟି ମର୍ମରୀ ଅଧିକ ବିଷୟରେ ପାଇଦୁଇଲୁ
ବାତି, ଯିବ୍ବିନି ମୁଖ ଥୁବୁ କାହାରେ କୋଣ ଭାବୁ ଦୂର ଦେଖି, ଅକ୍ଷର
ବାତରେ ଦୁଇ ମୁଖ ଥୁବୁ କାହାରେ କୋଣ ଭାବୁ କିମ୍ବା କାହିଁ କାହିଁ
ମୁଖ କାହାରେ ଦୁଇ ମୁଖ ଥୁବୁ କାହାରେ କୋଣ ଭାବୁ କିମ୍ବା
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ
କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ

“କୁଳରେ ମହାଦ୍ୱାର
ନତ୍ରେ ମୁହୂର୍ତ୍ତର ପାତା
ଦିଲେ ହେ ପାତା”

ଏ ଏହି ମୁଖୀ ହେ ମହାନ୍ତିର ଦୀର୍ଘ, ଉଚ୍ଛବି,
ଆମର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ, ଲୋକର ଦୀର୍ଘ, ବର୍ଷିତର ଦୀର୍ଘ, ପୃଷ୍ଠାଦୀର୍ଘ
ହେ ପୃଷ୍ଠାଦୀର୍ଘ କୁଳ ଆମାନଦୀର୍ଘ ହେ ଏହା ଏହା ଏହା
ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା
ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା ଏହା

ପ୍ରାଚୀମନ ସଂକୁଳ ପବିତ୍ରମେ ମହି ଦିନ, ଏଣ୍ଟି ଅତିକଳାଗ୍ରାମ ଆବଶ୍ୟକ
କାହାର ପାଇଁ ଜ୍ଞାନ ବିନ୍ଦୁ ଦୁଃ-୧ କାହାର ଦ୍ୱାରା, କାହା ପରା ଦୁଃ, ପାଇଁ
ଚଲାଇ ଦୀର୍ଘ, ସ୍ଥିରମେ ମହି ଦିନ କାହିଁ ମୁହଁକିଟେ ଅଜ୍ଞାନ କାହାରେ ଏ ବାହିମୀ,
ମୁହଁ, ସ୍ଥିର, ଦୁଃ, ଏ କାହିଁ କାହା ଦୁଃ, ମହି କିମ୍ବାକୁ ମହିମାରେ
କାହିଁ କ୍ଷେତ୍ର କାହା,

 ଯାହି କିମ୍ବାକୁ ମଙ୍ଗି ଏ କାହିଁ କ୍ଷେତ୍ର କବି ଯେତୋବ୍ରତ,
ଆକ ସମ୍ଭାବ୍ୟ କାହାରୀ କାହା କାହା - କାହାରେ ଏହା କିମ୍ବାକେ ଉତ୍ସମ୍ଭାବ
କାହାରେ ନିର୍ମିତ ନାହିଁ ଦିନକୁ କାହିଁ କାହା - କାହାରେ କିମ୍ବା ଅଭ୍ୟଦ୍ରବ ଅତିରି
ମାନ୍ୟ ଲାଭ ପାଇଁ କାହା କାହା ଅଭିନିଷ୍ଠାତ ଏହାର କାହା କାହା ଏହାର
ମହି ଦିନକୁ ଏକାନ୍ତର କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶିଷ ହାତ, କବିଙ୍କ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କ୍ଷେତ୍ର,
କାହାର କାହାରୀ, କାହାରୁକୁ କାହା ହେବା, କାହିଁ କାହାର କାହାରୁ କାହାରୁ କାହା
କାହାର କାହାରୀରୀ, କାହାରୁକୁ କାହା ହେବା, କବିଙ୍କ ମାନ୍ୟ ମାନ୍ୟରୀ ଜାତିମାନ
କାହାର କାହାରୁ କାହାରୀ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ
କାହାର କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ କାହାରୁ :

“ମାନ୍ୟ କିମ୍ବା ମାନ୍ୟ କିମ୍ବା ମାନ୍ୟ
ତେବେ ଦୂର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର ?”

জীবনিক কথি ও গেয়েছে কিনা—বহুব অনুভূতি বহুক্ষে তা
আমরা দ্রুত পাই—কালোয়া, এটা এক পুরুষ দৃশ্যে হুম বল মন হয়,
ক্ষেত্র-জীবনিক প্রতিক্রিয়া ও বিশ্বে কথা দেখ, সীমান্ত ও জীবনিক কিন্তু
আবদ্ধ ও নিঃসুর হয়ে রিষ্টেড, কাহি আস ওঁকুর প্রিয়মান মজি, মৃগি, মুক্তি
আবদ্ধ ও মুক্তির অন্তরুল দ্রুত আয়েছে, কিন্তু তা কেবল প্রেরণ আবশ্য,
তা মুক্তির অন্তরুল দ্রুত আয়েছে, কিন্তু তা কেবল মুক্তির দ্রুত, এই মুক্তিকেন্দ্ৰ
কৰিব মুক্তি কৰিলাম তা মুক্তি দ্রুত প্রিয়জনের দ্রুত, এই মুক্তিকেন্দ্ৰ
কৰিব একটা অপৰিহার্য আজি, এ কিন্তু কিনি কৰা মনো দেখে।

॥ অসম পঞ্চন কবিতায় কবি বহুক্ষে— মত্তুন কথি এই কিন্তু
গোলোবামুনি, অঙ্গুর আকাশ, মনু-চু-অঁ- একত্বে দুপ দ্রুত
প্রতিক্রিয়া করেছিল, কবন তা দ্রুতে ইতি দুয়া তা দ্রুতে মনুতে তৈরি
প্রতিক্রিয়া করেছিল, কবন তা দ্রুতে ইতি দুয়া তা দ্রুতে মনুতে তৈরি
কৰিব মনুতে গোলোবামুনি, তব তা দ্রুতে দ্রুতে চিন্তা আবশ্য
অঁ- লুক- দুয়া আলোয় দিতে হয় বাহি, আকাশ তা মুক্তিৰ জা
নাই বাহি, দ্বিতীয় তা মুক্তিৰ জাই বাহি, তিনি না গোলোবামুনি প্রসূ
এ দুবুক তাঙ্গুর মুক্তিৰ জাই কৰে না।

॥ জুমি- যানি, কবিতায় কবি বহুক্ষে স্ব, গেয়ান কবিতে
মুক্তি বক্তব্য আলৈ তা নিজে শুনে দেখানো কৰতে আকুন নি,
কবিতে মুক্তি কৰাকৰ কৰাকৰ মনু গেয়ে থাকি খেড়ে দোক দোক,
কবিতে মুক্তি কৰাকৰ কৰাকৰ মনু গেয়ে থাকি দুটে দোক, তাকে দিয়ে
কবিতে মুক্তি কৰাকৰ কৰাকৰ মনু গেয়ে থাকি দুটে দোক, তাকে দিয়ে
প্রতিশ্রুতি কৰে দিয়ে গেয়ান দোক নকারে কৰাকৰ কৰে দিয়ে সেনেন,
কবিতে কৰে দিয়ে দুটি অবিশা উপো, তাকে দুটি কুন্ত কুন্ত গেয়ান স্ব,
কবিতে কৰে দিয়ে দুটি অবিশা উপো, কবিতে দুটি কুন্ত কুন্ত গেয়ান স্ব,
কবিতে কৰে দিয়ে দুটি অবিশা উপো, কবিতে দুটি কুন্ত কুন্ত গেয়ান স্ব,
কবিতে কৰে দিয়ে দুটি অবিশা উপো, কবিতে দুটি কুন্ত কুন্ত গেয়ান স্ব,

ଏ ହିଁ ତୁମି ଆପନି ଦିଲ୍ଲି ଥା

ଆସନ୍ତାକୁ ହୁଣି କମାହୁ ଦେଖା

ଆମି ପରିମ୍ବା, ଆମି କମାହୁ ଦୂର୍ବ୍ଲାସ,

ଶୁଭ ଶୁଭ ଦୁର୍ବ୍ଲାସ ଆମାହୁ ଅନନ୍ଦ ଦୁର୍ବ୍ଲାସ ।

ଆମାହୁ ତୁମି ମୁହଁ ମୁହଁ

ଦୁର୍ବ୍ଲାସ ତୁମି

ଦୁର୍ବ୍ଲାସ ଦିଲ୍ଲି ନାମ କଣେ ଦେଖା ।

ଆମି ପରିମ୍ବା, ବୈପଳ କମାହୁ ଦୂର୍ବ୍ଲାସ,

ଆମି ପରିମ୍ବା, ଏହି କମାହୁ ଦୂର୍ବ୍ଲାସ,

ଆମି ପରିମ୍ବା, ଏହି କମାହୁ ଯାହାର ଏହା ଆମିନ୍ଦା ।

ଡୀକା - ରଧନ - ଦୁର୍ବ୍ଲାସ - କମୋ ଦୁର୍ବ୍ଲାସ ଆମିନ୍ଦା ।

ତାମି ପରିମ୍ବା, ତାମି ତାମି ଏହେ,

ଆମାହୁ ମୁହଁ ଚଢ଼ି

ଆମାହୁ ପକିନ ଦେଖେ

ଆପନ ପକିନ ଦେଖା ।

ଅଟି ମୁନୁପ - ଗେମନ୍ତି ଲୀନାର ଚମଜବୁ ବୁଲ୍ସ, ସବ୍ବି ବଳାକ୍ଷୟ, ମୀମାତଞ୍ଜି
କୁଷ ଉଳ୍ଳାଙ୍କିତ ପୌଡ଼ିହୁ ।

ব) মুক্তক চূড়ান্ত :-

প্রধানত অস্তরণ বীভিত্তি রূপে, অবিস্মিত ও কোন উৎসাহ প্রদত্তি
সম্পর্কে চূলালিক মিলিয়ত, বৈদ্যুতিক এ বৃহ-বজ্র গোটা প্রজেক্ষণ
পর্য প্রজেক্ষণ প্রচলন অবশ্যিক যু তাতে 'মুক্তক' বা 'মুক্তকা' দুর্ঘটনা

ব) মুক্তক চূড়ান্ত শুধৃতাঃ :-

- i) 'মুক্তক' বা 'মুক্তকা' প্রতিটি বা চূলালে প্রযোগে আম মাত্র যু
- ii) 'মুক্তক' ইলে প্রযোগ - প্রাচুর্য মিলিয়ত আড়ে,
- iii) বৈদ্যুতিক মুক্তক প্রধানত অস্তরণ বীভিত্তি রূপে।
- iv) অস্তরণ ইলে 'মুক্তক' রূপে অস্তা অন্ত প্রচারিত ১০-১৫০ম্বার
অস্তরণ, এবং শুধৃত আপি সহ মুক্তিক্ষেত্র কৃষ্ণ অস্তরণ-১ ম্বার, এবং
কৃষ্ণ বা শুধৃত ক্ষেত্র কৃষ্ণ অস্তরণ-২ ম্বার

ব) বৈদ্যুতিক কার্যালয় মুক্তক চূড়ান্ত অস্তরণ :-

বৈদ্যুতিক কার্যালয় বৃ ইলেক্ট্রিক দুর্ঘটনা' প্রযোগিতে রূপ 'মুক্তক' নাম
চিহ্নিত করে, এই নামবিহীন প্রক্ষেত্রে বৈদ্যুতিক অস্তরণ দিন না, 'মুক্তক' মধ্যে
অস্তরণ-১ এ ইলেক্ট্রিক প্রযোগ দিনে দিনে বৈদ্যুত অস্তরণ
'বলাকা' বৃশাক আগ্রে অন্ত অন্ত বৈদ্যুত দুর্ঘটনা এবং এই ক্ষেত্রে মুক্তিক্ষেত্রে অস্তিত্বে
৩ চূড়ান্ত স্তর দিনে ৩+৬ = ১৪ ম্বার, যিন্তু মুক্তক ইলেক্ট্রিক কার্যালয়
বৈদ্যুতিক তা অস্তিত্ব করে কৈবল্য প্রযোগে চূর্ণ মুক্তি করতে।

শুক্রবর্ষ চন্দ ২ মাসাব্দ, বৃহস্পতি পক্ষে ১৮ মাসাব্দ, ই. এক মুহূর্ত ২২ মাসাব্দ
পক্ষে ও আড়া, অসম এবং হলুড় পক্ষে মাঝে চন্দ নয়, কেবলমা পক্ষে
মাস্তা বৃহস্পতি মাসাব্দ, নিমিত্ত কামনায় দুয়ো দিয়েছিল।

ii) শুক্রমন্ত্র বা শুক্রবৃহস্পতি বা চন্দের পক্ষে আগ মাসাব্দ, নব মুক্ত
সন্তোষ মাস ২, ৪, ৬, ৮, ১০, ১২, শুক্রবৃহস্পতি মাসাব্দে এবং মাস্তা আড়া
মাসাব্দ হয়, কামনায় দিয়ে গুরুত্ব দেয়া নয় না।

iii) আড়া খনুম অরহমানতা 'শুক্র' হলুড় দুয়ো নয়, অথবা দুই দু বা পাঁচটু
কামনায় পক্ষে একে পড়তে গুরুত্ব বোঝা নিয়ম দেখ, তবে, দুই স্বর্ণমুক্ত দুই
ওয়াচি পক্ষে পক্ষে কামনায় পুরাণি উচ্চারণ আলো পক্ষে পুরাণতা
মুর্মুদত্ত মুক্তি; এই শুক্রকে অরহমানতা মন্ত্রিদ্বয়ে জামিনাব্দ নব আড়া ও
বেশি আবশ্যিক।

৭ বীজল

আমাব্দ জ্যৈষ্ঠ

কাঠ মন্ত্র দিল

জন্ম চক্র এ নিশ্চিল

দিলে দিলে শুক্র উ নিশ্চিল

অসেই পুরোহিত শুক্র বৃহস্পতি মন্ত্রিঃ

iv) শুক্রবৃহস্পতি - প্রাণিক দিয়ে আড়া করে, তা ন্তুর 'উদ্বৃত্তিমুক্তি'
অথ অমান 'বৰাহাব্দ', মধ্যে শুক্রবৃহস্পতি মিথ্যাব্দ মুক্তি, অসেই নাম 'অসিং
শুক্র' ও আড়া, যেন - 'পুরুষ' প্রকৃতি,

'বলবান', 'বুকি', অশোকাব্দ, 'চকুলা', 'উপবাস' প্রিয়ে অভিটি কাহিনীমুক্তি
শুক্রবৃহস্পতি প্রাণে নিষ্ঠ বৰ্ষা নয়,

মীরাত

দীপ্তি আলোকার অন্ধ ভোরা দেশাম যে, কুরুক্ষে
বিজ্ঞানীর ক্ষেত্রে প্রয়োজন আছে—'কলাম', 'কাব্য' কাগজের
বিজ্ঞান রচনার এই প্রয়োজন কি? আমাদের কথে সত্ত্ব-স্মৃতি
'রচনা', 'রচনা'র অন্তর্ভুক্ত কাব্যের কথাটা কুলে কৃতি রচনা,
বিজ্ঞান করিতে অসীম চিন্ময়, এবং—'প্রযুক্তি' জিয়ে, 'বিজ্ঞান'
নথীরে প্রযুক্তি কোর প্রয়োজন, অসীম বাণী-চিন্ময়,
কুম্ভার ও প্রক্রিয়ার ক্ষেত্রে অসীম পাইলে—প্রযুক্তি জ্ঞান
রচনা রচনা, 'ইতি রচনাম্বুঝ ধৰিলে আপ্নার দৃষ্টিতে
শ্রীর বন বল হয়, কিন্তু শৈক্ষণ্যে উ শ্রীর হয়, রক্তে
রচনি এই ইতিবি বলে একটি রচনি অভিঃ অক্ষুণ্ণ রচনা, রচনা
এই রচনি ক্ষেত্রে চিঠি জোলে সুরক্ষামূল্য করে রচনা,
কো জাহে প্রক্রি রেখা প্রক্রিয়া রচনা। 'রচনা' আর

ବ୍ୟାପକୀ

i) ରୁଦ୍ରନାଥେର ବଳାକା → ୮. ଶ୍ରୀମତୀ ବସୁ

ଅବସିକଳ → ୧୦/୧୭, ପ୍ରତ୍ୟାଚିଲା ଲ୍ଲୋ, ବଳକା - ୨୦୦.୦୦
ପ୍ରତ୍ୟାଚିଲା → ଜୁନ୍ଯାର୍, ୨୦୨୫

ii) ରୁଦ୍ର ମାତ୍ରିକ୍ରୂ ହୃଦୀକା → ନିଯାବକ୍ଷଣ ରାମ୍.

ଅବସିକଳ → ନିଯାବକ୍ଷଣ ପାରିଷିଦ୍ଧାର୍
ବଳକା - ୨୦୦୦୦୨

ପ୍ରତ୍ୟାଚିଲା → ୨୦ ମେସାର ୧୪୧୬

iii) ରୁଦ୍ର - କର୍ଣ୍ଣ - ପାତ୍ରକା → ଡେଲିନାମ କ୍ରିଚାର୍

ଅବସିକଳ → ଓଡ଼ିଶା ବୁଝାକି
→ ଶ୍ରୀମାଚନ୍ଦ୍ର ଦେସିଟ୍

ବଳକା - ୨୦୦୦୭୬

ଏମୋହର ମହିନେ - ୨୨ ମେ ଆବଳ ୧୮୨୨,

কুতুজা শ্রীগন্ধি

আমার এই অরম্ভস্থানের রচনাটি গবেষণা করতে চাইলে
যে এই গ্রন্থটি মহাযোগিতা ও প্রগতিশৈলী এবং বাস্তুবিদ্যার
ভাবে অবৃ অতি জামার অকাও ও কুপ্ততা গুরুত্ব, কুণ্ডি
ব্লাষ্ট সেই সমস্ত প্রাচীবাচনের রচনার থেকে প্রাপ্ত রিপোর্ট
ও নথিপত্র আমার অভ্যন্তর রচনার প্রাপ্ত সম্পর্ক
করেছে, এইস্থানে প্রশংসন্ত যোগেক্ষণস্থ রচনার
বিবরণের উপরিভাব,

EXAMINED

২০১৩ মার্চ ২১/১/১৩,
—/—/— (Signature)
কলেজ/কলেজ প্রক্ষেপণ বৃত্তি

DD

Department of Bengali
S.J. Mahavidyalaya